वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 327 शनिवार 2 मई 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

विदेशी भाषा संचार कौशल कार्यक्रम के लिए एमओयू कार्यक्रम

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, समाज को जोड़ने का जरिया: धर्मेन्द्र

विदेशी भाषा सीखने के ऐतिहासिक एमओयू से युवा भरेंगे लम्बी उड़ान: भजनलाल शर्मा

जयपुर. शाबाश इंडिया

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शुक्रवार को बिड़ला ऑडिटोरियम में विदेशी भाषा संचार कौशल कार्यक्रम के लिए एमओयू कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राजस्थान के युवाओं में मेहनत, नवाचार, उद्यमिता के साथ-साथ भाषाओं और संस्कृतियों को आत्मसात करने की नैसर्गिक प्रतिभा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से आज देश का युवा डिग्री और सर्टिफिकेट से आगे बढ़कर अपने कौशल एवं सामर्थ्य संवर्धन के प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि यूरोपीय यूनियन के साथ हुए फ्री ट्रेड एग्रीमेंट से युवाओं को विदेशी भाषा से संबंधित रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को बहुभाषी और अंतर्राष्ट्रीय बनाने पर बल

उन्होंने कहा कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि समाज को जोड़ने और समझने का माध्यम है। विकसित भारत के सपने को साकार करने की दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 महत्वपूर्ण कदम है, जिसमें शिक्षा को बहुभाषी और अंतर्राष्ट्रीय बनाने पर जोर दिया गया है। फ्रेंच, जर्मन, जापानी, कोरियन और स्पेनिश जैसी भाषाएं सीखने से युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर खुलेंगे। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में राजस्थान की लोककथाएं जैसे पृथ्वीराज चौहान की गाथा विदेशी भाषा में अनुवादित होगी और दुनिया तक पहुंचेगी। उन्होंने कहा कि जापान और कोरिया जैसे देशों में रोजगार की व्यापक संभावनाएं हैं। हमारे युवा इन देशों की भाषाएं सीखते हैं, तो वे न केवल सॉफ्टवेयर बल्कि हार्ड ट्रेड और मार्केटिंग सहित विभिन्न क्षेत्रों में भी अवसर पा सकते हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रमुख पयर्टन स्थलों की वजह से राजस्थान के लिए विदेशी भाषा का विशेष महत्व है। दुनिया भर से यहां सैलानी आते हैं।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की नीतियों से प्रदेश के कई अंचलों में पर्यटन उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। विदेशी भाषाएं जानने वाले गाइड, होटल मैनेजर, ट्रैवल एजेंट और व्यापारियों के लिए रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

राज्य सरकार ने डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने का काम किया

उन्होंने कहा कि युवाओं के सपनों को पूरा करने के लिए राज्य सरकार ने प्रदेश में नये महाविद्यालयों के निर्माण और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने का काम किया है। इसके लिए 71 नए राजकीय महाविद्यालय खोलने के साथ ही, 185 नए राजकीय महाविद्यालयों के भवनों का निर्माण किया गया है। जबकि गत सरकार ने पूरे 5 साल में केवल 57 महाविद्यालयों के भवन बनाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने शिक्षा को रोजगार से जोड़ा और अब डिग्री से युवाओं के जीवन को नई दिशा मिल रही है। राज्य सरकार ने गुणवत्तापूर्ण कौशल प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए राज्य कौशल नीति और युवा नीति बनाई गई है। युवाओं को सवा लाख से अधिक पदों पर नियुक्तियां दी हैं। साथ ही, 1 लाख 33 हजार पदों पर भर्ती प्रक्रियाधीन है एवं सवा लाख पदों का भर्ती कैलेंडर जारी किया गया है। निजी क्षेत्र में भी अब तक 3 लाख रोजगार उपलब्ध कराए गए हैं।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में युवाओं की प्रतिभा को निखारा जा रहा

उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने कहा कि यह एमओयू केवल कागजी समझौता नहीं बल्कि हमारे युवाओं को अवसरों से जोड़ने का सशक्त एवं प्रभावी माध्यम है। कौशल, नियोजन एवं उद्यमिता राज्यमंत्री के.के विश्नोई ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में युवाओं की प्रतिभा को निखारा जा रहा है। इस अवसर पर राज्य सरकार तथा इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेजेज यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के मध्य विदेशी भाषा संचार कौशल कार्यक्रम के लिए एवं स्किल इंडिया इन्टरनेशनल सेंटर जयपुर की स्थापना के लिए राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के मध्य एमओयू का आदान-प्रदान किया गया। साथ ही, नेशनल एन्टरप्रेन्योर एम्पावरमेंट ड्राइव के अन्तर्गत भी विभिन्न एमओयू संपादित हुए। इससे पहले इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेजेज यूनिवर्सिटी के जर्नल का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने युवाओं से संवाद भी किया।

शाबाश इंडिया

समारोह स्थगन सूचना

शाबाश इंडिया द्वारा आज **शनिवार 2 मई** को महावीर स्कूल, सी स्कीम सभागार में होने वाले स्थापना दिवस समारोह को अपरिहार्य कारण से आगामी सूचना तक स्थगित किया जा रहा है।

असुविधा के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

समारोह की नई तिथि की सूचना जल्दी ही आप से साझा की जाएगी।

आपके सहयोग और समझ के लिए धन्यवाद।

WWW.SHABAASINDIA.COM | /@shabaashindianews

अहिंसा परमो धर्मः

दिगम्बर जैन महासमिति

पश्चिम संभाग जयपुर

दिगम्बर जैन महासमिति पश्चिम संभाग जयपुर

एक छोटी सी पहल –

परिंडा अभियान

बिना किसी बैनर, बिना प्रचार-प्रसार...

बस अपने घर पर एक परिंडा जरूर लगाएँ।

यह छोटा सा प्रयास
पक्षियों के प्रति प्रेम बढ़ाएगा
और आपको आत्मिक संतोष भी देगा।

परिंडा लगाकर उसकी फोटो नीचे दिए गए किसी भी सदस्य को भेजें।

सभी फोटो का सुंदर कोलाज बनाकर अंचल व राष्ट्रीय स्तर पर भेजा जाएगा।

आइए, इस पुण्य कार्य में अपना योगदान दें।

संपर्क:

1 रमेश चंद्र बोहरा	9983984716	10 ज्ञानचंद जैन भोंच	9461242478
2 विजय कुमार पांड्या	9314434540	11 भागचंद बाकलीवाल	9829059035
3 सुभाष चंद्र पाटनी	9414044370	12 रतनलाल जैन	8003826000
4 जयंत जैन	8875888899	13 निर्मल कुमार लुहाड़िया	9314514290
5 सतीश भोंच	9414279838	14 राहुल जैन गोधा	9828375682
6 धनु कुमार जैन	9530399413	15 राजेंद्र कुमार पांड्या	9460191765
7 नरेंद्र कुमार ठोलिया	7413002053	16 कमल कुमार जैन	8005640417
8 प्रकाश चंद जैन	9928060143	17 मुकेश ठोलिया	9828944411
9 जितेंद्र मोहन कासलीवाल	9828017429	18. हीरा चन्द बैद	9828164556

इनके साथ ही निम्नलिखित इकाई मंत्रियों का सहयोग रहेगा

सर्व श्री मनोज झांझरी, सूरज अजमेरा, अशोक सोगानी, परेश पाटनी, अनिल टोंग्या, पदम चन्द चोंधरी, प्रमोद बड़जात्या, राज कुमार छाबड़ा, सूर्य प्रकाश छाबड़ा, राकेश गंगवाल, राजेंद्र कुमार पापड़ीवाल, नितिन पाटनी, प्रवीण कुमार जैन एवं राकेश कुमार संघी।

🙏 **धन्यवाद** 🙏

निर्मल कुमार संघी	**महेंद्र छाबड़ा**	**मनोज गोधा**
अध्यक्ष	मंत्री	कोषाध्यक्ष

अष्टापद (बद्रीनाथ) के लिए जैन यात्रा संघ रवाना

जयपुर. शाबाश इंडिया

प्रातः 7.30 बजे चित्रकूट जिन मंदिर में दर्शन-पूजन के पश्चात अष्टापद (बद्रीनाथ) जैन यात्रा संघ की दो बसें दिगंबर जैन महासमिति के तत्वावधान में तथा अशोक कुमार जैन पवालिया के संयोजकत्व में रवाना हुईं। यात्रा का शुभारंभ महासमिति राजस्थान अंचल के महामंत्री महावीर कुमार बाकलीवाल, सांगानेर संभाग के अध्यक्ष कैलाशचंद्र मलैया, उपाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार झांझरी एवं महामंत्री डॉ. अरविंद कुमार जैन द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। इस अवसर पर पंडित कैलाशचंद्र मलैया ने मंत्रोच्चार के साथ बसों पर स्वस्तिक अंकित कर यात्रा की मंगलकामना की। चित्रकूट जिन मंदिर के अध्यक्ष अशोक जैन सहित पदाधिकारियों, महासमिति सदस्यों एवं परिजनों ने यात्रा संयोजक अशोक कुमार जैन पवालिया, दोनों वाहन चालकों तथा सभी यात्रियों का तिलक, माला एवं अंगवस्त्र पहनाकर स्वागत किया। इस यात्रा में जयपुर, भीलवाड़ा, सागवाड़ा, टोंक, कोटा, बूंदी, कोलकाता आदि स्थानों से कुल 43 श्रद्धालु शामिल हुए, जिनकी आयु लगभग 50 से 70 वर्ष के बीच है। यात्रा मार्ग में जयपुर से तिजारा, सिद्धांत क्षेत्र, बड़ागांव खेकड़ा, हस्तिनापुर, अष्टापद (दिल्ली रोड), हरिद्वार, ऋषिकेश, बद्रीनाथ, मंगलायतन एवं मथुरा चौरासी होते हुए पुनः जयपुर वापसी निर्धारित है। यात्रा प्रारंभ होने से पूर्व सभी श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से मंगल एवं कुशल यात्रा की कामना करते हुए प्रार्थना की।

कैलाशचंद्र मलैया, अध्यक्ष, सांगानेर संभाग, महासमिति

आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का 69वां अवतरण दिवस मुरैना में हर्षोल्लास से मनाया गया

मुरैना. शाबाश इंडिया

मुरैना में आचार्य 108 ज्ञानसागर महाराज का 69वां अवतरण दिवस श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यह आयोजन श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पंचायती बड़ा मंदिर रोड परिसर में हुआ, जो आचार्य श्री की जन्मस्थली भी है।

धार्मिक अनुष्ठान और भक्ति

सकल जैन समाज मुरैना द्वारा आचार्य श्री के चित्र का अनावरण कर मंगल आरती की गई। मंदिर परिसर गुरुदेव के जयकारों और भक्ति गीतों से गुंजायमान रहा। वक्ताओं ने आचार्य श्री के जीवन को संयम, अहिंसा और आत्मशुद्धि का अनुपम उदाहरण बताते हुए उनके योगदान को याद किया।

सेवा कार्य और अन्नदान

अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में सात्विक भोजन और शीतल पेय का वितरण किया गया। भीषण गर्मी के बीच आयोजित इस सेवा कार्यक्रम में हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की। समाजजनों ने कहा कि ऐसे आयोजन समाज में सद्भाव, सेवा और एकता का संदेश देते हैं। आयोजन समिति ने सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त करते हुए आचार्य श्री के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया। पूरा कार्यक्रम भक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ संपन्न हुआ।

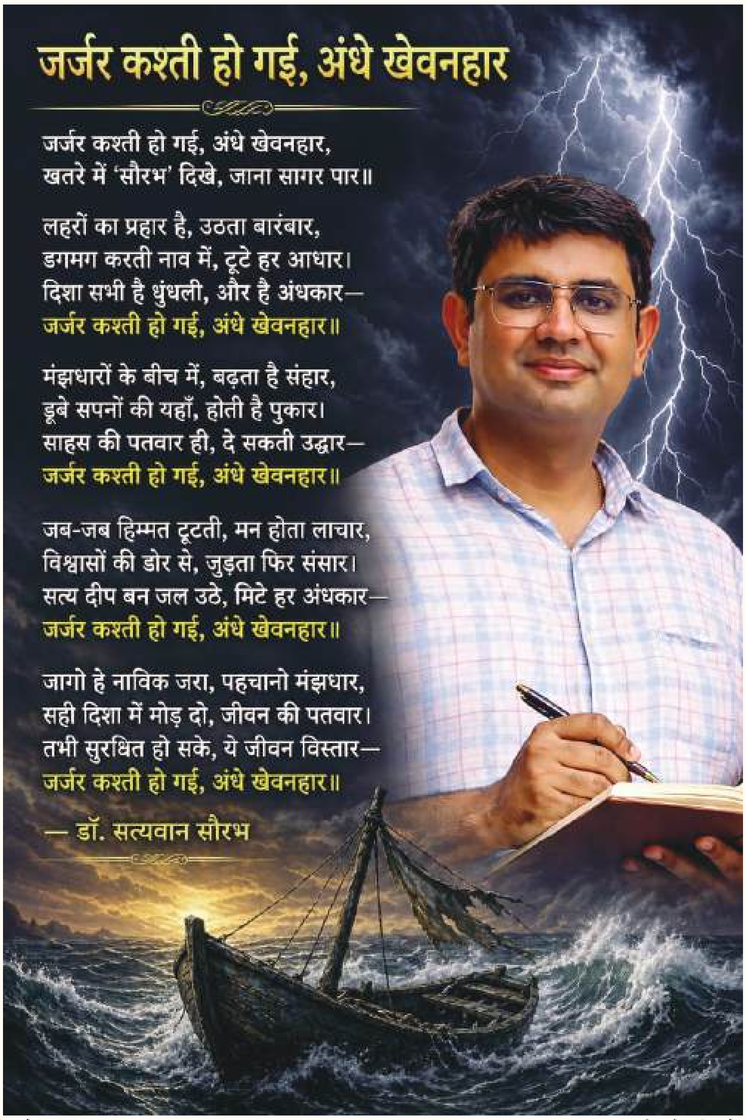

राजनीति

धरती के स्वर्ग तक तेज भारतीय रेल की रफ्तार

विनोद कुमार सिंह

जम्मू-तवी से श्रीनगर तक विस्तारित वंदे भारत एक्सप्रेस सेवा केवल एक परिवहन परियोजना नहीं, बल्कि विकास, आस्था, पर्यटन और आजीविका के समन्वय का जीवंत उदाहरण बनकर उभरी है। यह विस्तार उस बदलते भारत की कहानी कहता है, जहां आधुनिक कनेक्टिविटी दूरस्थ क्षेत्रों को भी मुख्यधारा से जोड़ रही है। जब रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस सेवा को हरी झंडी दिखाई, तो उन्होंने इसे जम्मू-कश्मीर के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। उनके अनुसार, यह पहल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस संकल्प का हिस्सा है, जिसमें देश के सबसे दुर्गम क्षेत्रों तक भी आधुनिक सुविधाएं पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह केवल यात्रा को आसान बनाने का प्रयास नहीं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त करने और युवाओं के लिए नए अवसर पैदा करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण पहल है। इस सेवा का विस्तार उस प्रक्रिया का परिपक्व रूप है, जिसकी शुरूआत जून 2025 में कटरा से श्रीनगर के बीच वंदे भारत सेवा के संचालन से हुई थी। अब जम्मू-तवी तक इसके विस्तार ने न केवल भौगोलिक दूरी कम की है, बल्कि लोगों के बीच भावनात्मक दूरी को भी घटाया है। कश्मीर की सुंदर वादियों में दौड़ती यह आधुनिक ट्रेन प्रकृति और प्रौद्योगिकी के अद्भुत संगम का अनुभव कराती है। देवदारों से आच्छादित पर्वत, बादलों से घिरी घाटियाँ और दूर तक फैली हरियाली इस यात्रा को अविस्मरणीय बना देते हैं। इस मार्ग पर स्थित चिनाब रेल पुल और अंजी खड़ पुल जैसे इंजीनियरिंग चमत्कार आधुनिक भारत की तकनीकी क्षमता का सशक्त परिचय देते हैं। इन संरचनाओं के बीच से गुजरती ट्रेन यह संदेश देती है कि विकास और प्रकृति के बीच संतुलन संभव है। यह परियोजना इस बात का प्रमाण है कि कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में भी दृढ़ संकल्प और नवाचार के बल पर असंभव को संभव बनाया जा सकता है। जम्मू-कश्मीर में पिछले कुछ वर्षों में स्थापित शांति और स्थिरता ने इस प्रकार की परियोजनाओं को गति दी है।

संपादकीय

नेपाल की नई सरकार और भारत के संबंध

काठमांडू में मार्च 2026 में हुए चुनावों के बाद नेपाल की राजनीति में एक नई पीढ़ी का उदय हुआ है। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के नेतृत्व में 35 वर्षीय पूर्व मेयर बालेन शाह ने प्रधानमंत्री पद की शपथ लेकर देश को एक नए युग में प्रवेश कराया है। यह परिवर्तन केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि एक पीढ़ीगत बदलाव का संकेत है। 2025 के विरोध प्रदर्शनों ने पुरानी राजनीतिक व्यवस्था को चुनौती दी, जिसमें के.पी. शर्मा ओली की सरकार भी शामिल थी। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और अभिव्यक्ति पर प्रतिबंध जैसे मुद्दों ने युवाओं को आंदोलित किया और अब उसी ऊर्जा ने नई सरकार को जन्म दिया है। भारत-नेपाल संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से गहरे जुड़े हुए हैं। 'रोटी-बेटी' के रिश्ते, खुली सीमा और साझा धार्मिक विरासत इन संबंधों की मजबूत नींव हैं। लाखों नेपाली नागरिक भारत में रोजगार पाते हैं, जिससे दोनों देशों के बीच लोगों का जुड़ाव और मजबूत होता है। हालांकि, हाल के वर्षों में कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा जैसे सीमा विवादों तथा चीन के बढ़ते प्रभाव ने संबंधों में तनाव पैदा किया। राष्ट्रवादी भावनाओं और बड़े भाई की धारणा ने आपसी विश्वास को प्रभावित किया। अब बालेन शाह की नई सरकार के साथ दोनों देशों के पास संबंधों को पुनर्संतुलित करने का अवसर है। नई सरकार ''नेपाल पहले, नेपाली पहले'' की नीति अपनाते हुए संतुलित विदेश नीति की बात कर रही है। वह नेपाल को भारत और चीन के बीच एक सक्रिय सेतु के रूप में स्थापित करना चाहती है। भारत ने इस बदलाव का स्वागत किया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तुरंत संवाद स्थापित कर सहयोग की इच्छा जताई है। यह संकेत है कि दोनों देश नई शुरूआत के लिए तैयार हैं। सहयोग के कई महत्वपूर्ण क्षेत्र सामने हैं। ऊर्जा क्षेत्र में नेपाल की विशाल जलविद्युत क्षमता भारत के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकती है। नेपाल पहले ही भारत को बिजली निर्यात कर रहा है और भविष्य में 10000 मेगावाट तक के समझौते की संभावनाएं हैं। कनेक्टिविटी, पेट्रोलियम पाइपलाइन, डिजिटल भुगतान और व्यापार जैसे क्षेत्रों में भी सहयोग तेजी से बढ़ रहा है। नेपाल की अर्थव्यवस्था भारत से गहराई से जुड़ी है, जिससे दोनों देशों के लिए आर्थिक साझेदारी अनिवार्य बन जाती है। भारत के लिए नेपाल की स्थिरता रणनीतिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। हिमालयी क्षेत्र में चीन की सक्रियता और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा दोनों देशों को सहयोग की दिशा में प्रेरित करती है। यदि नेपाल आर्थिक सुधारों और रोजगार सृजन पर ध्यान देता है, तो यह पूरे क्षेत्र में स्थिरता लाने में सहायक होगा। भारत को भी पड़ोसी पहले की नीति के तहत नेपाल की संप्रभुता और संवेदनशीलताओं का सम्मान करना होगा। फिर भी चुनौतियां मौजूद हैं। सीमा विवाद अभी भी अनसुलझे हैं और नेपाल को भारत, चीन तथा अन्य वैश्विक शक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखना होगा। बालेन शाह की राष्ट्रवादी छवि उन्हें सावधानी से कदम उठाने के लिए प्रेरित करेगी।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

समाजोन्मुखी पत्रकारिता के पितामह हैं देवर्षि नारद

योगेश कुमार गोयल

देवर्षि नारद की छवि को अक्सर चुगलखोर अथवा इधर की उधर करने वाले पौराणिक पात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल भिन्न है। उनका मूल उद्देश्य प्रत्येक जीव की वाणी और भाव को भगवान तक पहुंचाना था। वे एक लोक से दूसरे लोक तक निरंतर भ्रमण करते हुए संवाद-संकलन का कार्य करते थे और इस प्रकार एक सक्रिय, सजग तथा समाजोन्मुख संवाददाता की भूमिका निभाते थे। उनका कार्य जोड़ने का था, तोड़ने का नहीं। इसी कारण उन्हें पत्रकारिता का प्रथम प्रेरणास्त्रोत और पितामह माना जाता है। देवर्षि नारद देवताओं के ऋषि होने के साथ-साथ ब्रह्माण्ड के प्रथम दिव्य संवादवाहक माने जाते हैं। वे निरंतर संचार, संवाद और सूचना के आदान-प्रदान के माध्यम से लोकों को जोड़ते रहे। उनकी विशेषता यह थी कि वे केवल संदेशवाहक नहीं थे, बल्कि संदेश के पीछे छिपे सत्य और धर्म को भी समझते थे। इस दृष्टि से वे आज की जिम्मेदार पत्रकारिता के आदर्श उदाहरण हैं। मान्यता है कि उनका जन्म ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को हुआ था, इसलिए प्रतिवर्ष इसी तिथि को नारद जयंती मनाई जाती है। इस दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा के साथ देवर्षि नारद का स्मरण किया जाता है। वे अपनी वीणा की मधुर ध्वनि के साथ भगवान विष्णु का गुणगान करते हुए ''नारायण-नारायण'' का जप करते रहते थे। उन्हें महर्षि व्यास, महर्षि वाल्मीकि और शुकदेव जैसे महान ऋषियों का गुरु भी माना जाता है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार देवर्षि नारद अनेक विद्याओं और कलाओं में पारंगत थे। संगीत की शिक्षा उन्हें ब्रह्मा से प्राप्त हुई और भगवान विष्णु से उन्होंने माया के विभिन्न स्वरूपों को समझा। उन्होंने भक्त प्रह्लाद, ध्रुव और अम्बरीष जैसे महान भक्तों को भक्ति मार्ग में प्रेरित किया। वे समाज में धर्म और सत्य की स्थापना के लिए निरंतर सक्रिय रहे। उन्होंने ही महर्षि वाल्मीकि को रामायण की रचना के लिए प्रेरित किया, जो आज भी मानवता के लिए मार्गदर्शक ग्रंथ है। एक पौराणिक कथा में उनकी करुणा और न्याय दृष्टि का सुंदर वर्णन मिलता है। जब उन्होंने पृथ्वी पर अधर्म और दुख देखा, तो वे स्वयं व्यथित हो उठे और भगवान विष्णु से इसका कारण पूछा। भगवान ने उन्हें समझाया कि संसार में प्रत्येक घटना कर्म और भाग्य के अनुसार होती है। इस कथा के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि नारद केवल संदेशवाहक नहीं, बल्कि सत्य के खोजी और धर्म के व्याख्याता भी थे। देवर्षि नारद को वेदों और उपनिषदों का ज्ञाता, धर्म और न्याय का तत्वदर्शी तथा एक कुशल वक्ता माना गया है। वे ज्योतिष, संगीत, आयुर्वेद और योग में भी पारंगत थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था और वे हर युग में प्रासंगिक बने रहे। ''नारद पुराण'' जैसे ग्रंथों में उन्होंने भक्ति, धर्म, मोक्ष और जीवन मूल्यों का गहन विवेचन किया है। 'नारद संहिता' संगीत का महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। आज जब पत्रकारिता कई चुनौतियों से गुजर रही है, तब देवर्षि नारद का जीवन हमें यह सिखाता है कि संवाद का उद्देश्य समाज को जोड़ना, सत्य को सामने लाना और जनहित की रक्षा करना होना चाहिए। वे न केवल पौराणिक चरित्र हैं, बल्कि आदर्श संचारक और समाजोन्मुख पत्रकारिता के शाश्वत प्रतीक हैं।

जैन मित्र मंडल ने मनाया आचार्य ज्ञानसागर जी का 70वां अवतरण दिवस; ज्ञानतीर्थ पर उमड़ा जनसैलाब

मुरैना (मनोज जैन नायक)

दिगम्बर जैन संत आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के 70वें अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित त्रिदिवसीय समारोह के प्रथम दिन मुरैना में भक्ति का अनूठा संगम देखने को मिला। जैन मित्र मंडल द्वारा ज्ञानतीर्थ जिनालय में प्रभातफेरी और परिक्रमा सहित अनेक भव्य धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

धार्मिक अनुष्ठान और गुरु पूजन

समारोह का शुभारंभ भगवान आदिनाथ के अभिषेक और पूजन के साथ हुआ। आयोजन समिति के मुख्य संयोजक महेशचंद्र जैन बंगाली ने शांतिधारा करने का सौभाग्य प्राप्त किया। राजेंद्र भंडारी, मनोज जैन नायक और अन्य अतिथियों द्वारा आचार्य श्री के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्वलन किया गया। गुरुभक्त संतोष जैन 'आयरन वालों' ने आचार्य श्री के चरणों का पाद प्रक्षालन किया, जिसके पश्चात सामूहिक महाआरती की गई।

भव्य शोभायात्रा और परिक्रमा

ए.बी. रोड स्थित ज्ञानतीर्थ जिनालय में एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। इसमें श्रद्धालु आचार्य श्री की तस्वीर को कंधे पर लेकर चलेपचरंगे ध्वजों और ढोल-नगाड़ों की थाप पर युवा थिरकते नजर आए, वहीं महिलाएं भजन गायन करते हुए चल रही थीं। इस भव्य शोभायात्रा ने कृत्रिम पहाड़ी पर विराजमान बड़े बाबा (भगवान आदिनाथ) की तीन परिक्रमा कर धर्म लाभ लिया।

विशाल भंडारा और सेवा कार्य

अवतरण दिवस के अवसर पर ज्ञानतीर्थ के मुख्य द्वार पर विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। कार्यकर्ताओं ने हाइवे से गुजरने वाले राहगीरों को रोक-रोक कर आत्मीयता से शुद्ध देशी घी में निर्मित भोजन प्रसादी, शीतल जल और शरबत का वितरण किया। आने-जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए निःशुल्क वाहनों की भी व्यवस्था की गई थी।

भावी संकल्प और आगामी कार्यक्रम

जैन मित्र मंडल ने संकल्प लिया कि अब प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को सभी सदस्य सामूहिक रूप से ज्ञानतीर्थ पहुंचकर भगवान का अभिषेक और पूजन करेंगे।

त्रिदिवसीय उत्सव के आगामी पड़ाव:

02 मई (शनिवार): गौशाला में चारा-गुड़ दान और पक्षियों के लिए परिंडों का वितरण।
03 मई (रविवार): नगर में मानव सेवा के लिए शीतल प्याऊ का शुभारंभ।

समारोह में राजेंद्र भंडारी, अनूप भंडारी, एडवोकेट धर्मेंद्र जैन और सुनीत ठेकेदार सहित बड़ी संख्या में समाज के गणमान्य नागरिक और गुरुभक्त उपस्थित रहे।

पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज का प्रथम पट्टाचार्य दिवस मांगूर में मनाया गया

मांगूर. शाबाश इंडिया

पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराजजी का प्रथम पट्टाचार्य दिवस मांगूर में मुनि श्री सारस्वत सागरजी महाराज, मुनि श्री जयंत सागरजी महाराज एवं मुनि श्री सिद्ध सागरजी महाराज के सानिध्य में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया गया। अभिजीत इंग्रोळे, मांगूर ने बताया कि इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर आचार्य श्री के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। आचार्य श्री विरागसागर महाराज के सुशिष्य, आध्यात्म योगी, चर्या शिरोमणि एवं वीतरागी श्रमण संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज का विशेष स्थान है। भारत की पावन धरती पर ऋषि-मुनियों ने अपने तप, त्याग और साधना से समाज को नई दिशा दी है। उसी परंपरा में आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज इक्कीसवीं सदी के दूरदर्शी संत, युवाओं के प्रेरणास्रोत और आगमानुसार आचरण करने वाले आध्यात्मिक गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनके द्वारा की जा रही धर्मप्रभावना समाज को सत्य, अहिंसा, मैत्री और ''जियो और जीने दो'' का संदेश देती है। उनका प्रमुख संदेश ह्नमोस्तु शासन जयवंत होह्र व्यापक रूप से जन-जन तक पहुंच रहा है। आचार्य श्री का जन्म 18 दिसंबर 1971 को मध्य प्रदेश के भिंड जिले में स्थित रूर ग्राम में हुआ। वहीं उनकी प्रारंभिक शिक्षा दसवीं तक पूर्ण हुई। दीक्षा क्रमः राजेंद्र

(लला) ने अपने गुरु आचार्य श्री विरागसागर महाराज के करकमलों से 11 अक्टूबर 1989 को भिंड में क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की, जिसके पश्चात उनका नाम क्षुल्लक श्री यशोधर सागरजी रखा गया। उस समय उनकी आयु 18 वर्ष थी। इसके लगभग दो वर्ष पश्चात 19 जून 1991 को पन्ना नगर में उन्होंने ऐलक दीक्षा ग्रहण की। तत्पश्चात मात्र छह माह बाद, 21 नवंबर 1991 को श्रेयांसगिरि में 20 वर्ष की आयु में मुनि दीक्षा ग्रहण कर मुनि श्री 108 विशुद्धसागरजी महाराज के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आचार्य श्री विरागसागर महाराज ने उनकी योग्यता, साधना और आध्यात्मिक ऊंचाई को देखते हुए 31 मार्च 2007 को औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में महावीर जयंती के पावन अवसर पर उन्हें आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। मुनि दीक्षा के लगभग 15 वर्ष 6 माह पश्चात 35 वर्ष की आयु में उन्हें यह सर्वोच्च दायित्व प्रदान किया गया। कार्यक्रम के दौरान आचार्य श्री के जीवन, तप और त्याग पर प्रकाश डाला गया तथा उनके द्वारा समाज में किए जा रहे आध्यात्मिक एवं नैतिक मार्गदर्शन की सराहना की गई।

— अभिषेक अशोक पाटील, कोल्हापुर

पीएचडी: उपाधि नहीं, ज्ञान-सृजन की निरंतर यात्रा

डॉ. प्रियंका सौरभ

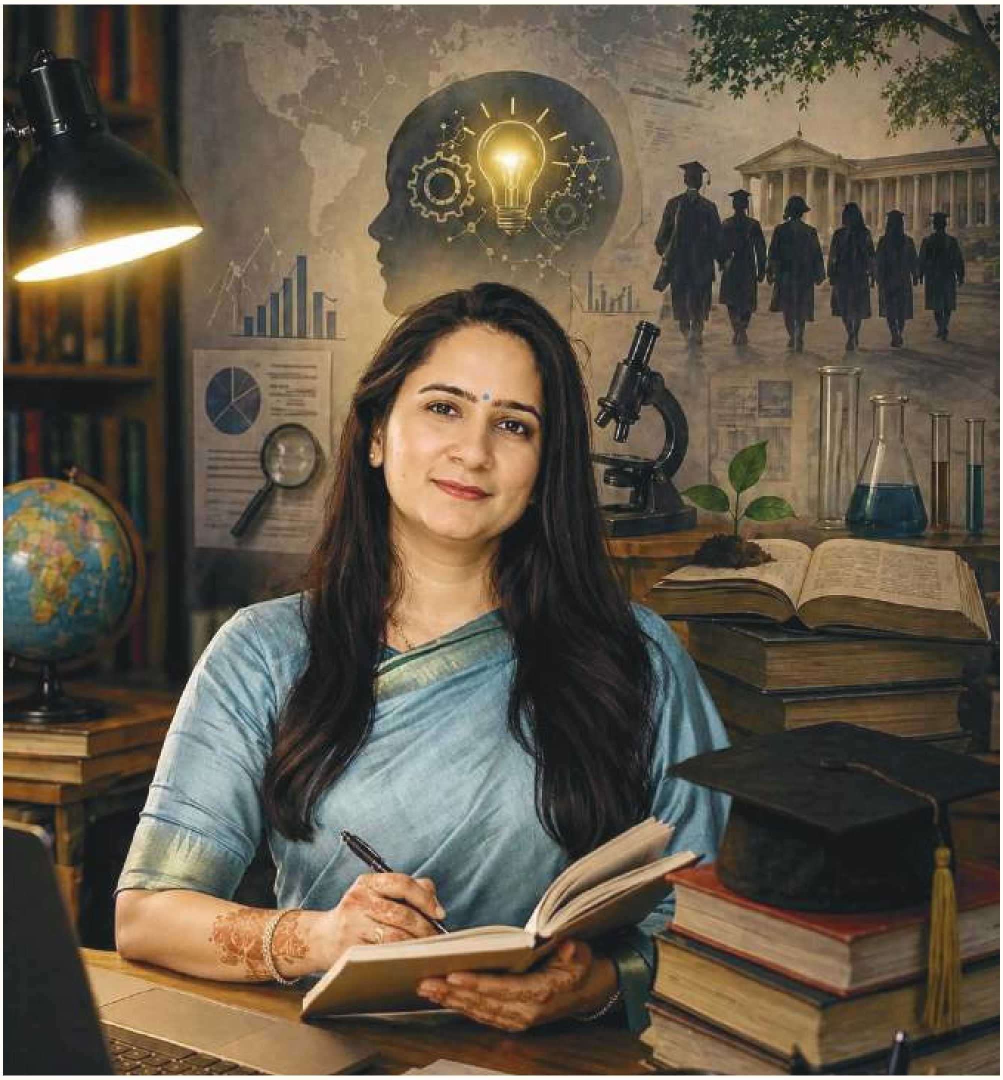

आज के समय में पीएचडी को लेकर समाज में अनेक धारणाएँ प्रचलित हैं। कुछ लोग इसे केवल 'डिग्री' मानते हैं, कुछ इसे नौकरी पाने का साधन समझते हैं, जबकि कुछ इसे प्रतिष्ठा का प्रतीक मान बैठते हैं। सोशल मीडिया पर भी समय-समय पर ऐसे लेख और टिप्पणियाँ सामने आती रहती हैं जिनमें पीएचडी की उपयोगिता, कठिनाई और वास्तविक अर्थ पर बहस होती है। वास्तव में पीएचडी केवल एक प्रमाणपत्र नहीं, बल्कि ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाने की सतत बौद्धिक यात्रा है। यह थीसिस लिखकर समाप्त होने वाली प्रक्रिया नहीं, बल्कि शोध-चिंतन, विश्लेषण और समाजोपयोगी योगदान की निरंतर साधना है। पीएचडी का मूल उद्देश्य किसी विषय के स्थापित ज्ञान को दोहराना नहीं, बल्कि उसमें नया जोड़ना है। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर तक विद्यार्थी प्रायः उपलब्ध ज्ञान को पढ़ते, समझते और परीक्षाओं के माध्यम से सिद्ध करते हैं। परंतु पीएचडी उस बिंदु से आगे की अवस्था है जहाँ शोधार्थी स्वयं प्रश्न गढ़ता है, समस्या की पहचान करता है, पद्धति चुनता है, प्रमाण जुटाता है और निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। इस अर्थ में पीएचडी 'सीखने' से अधिक 'नया रचने' की प्रक्रिया है। बहुत से लोग समझते हैं कि पीएचडी का मतलब केवल मोटी थीसिस जमा कर देना है। यह सोच अधूरी है। थीसिस तो उस दीर्घ यात्रा का लिखित दस्तावेज है जो कई वर्षों के अध्ययन, क्षेत्रकार्य, प्रयोग, डेटा विश्लेषण, आलोचनात्मक चिंतन और संशोधन के बाद तैयार होता है। एक अच्छी थीसिस में केवल शब्दों की संख्या नहीं, बल्कि विचारों की मौलिकता, शोध की ईमानदारी और निष्कर्षों की उपयोगिता महत्व रखती है। यदि शोधार्थी ने समस्या को गहराई से समझा, उचित पद्धति अपनाई और निष्पक्ष निष्कर्ष दिए, तभी उसका शोध सार्थक माना जाता है। पीएचडी शोधार्थी को धैर्य सिखाती है। शोध में अक्सर त्वरित परिणाम नहीं मिलते। कई बार महीनों का प्रयास असफल हो जाता है, परंतु शोधकर्ता पुनः आरंभ करता है। विज्ञान प्रयोगशाला में प्रयोग विफल हो सकते हैं, समाज विज्ञान में सर्वेक्षण अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकता, साहित्य में संदर्भ सामग्री अधूरी मिल सकती है। फिर भी शोधार्थी हार नहीं मानता। यही निरंतरता उसे साधारण विद्यार्थी से शोधकर्ता बनाती है। यह भी सत्य है कि पीएचडी केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, सामाजिक जिम्मेदारी भी है। जब कोई व्यक्ति शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, अर्थशास्त्र, भाषा, पर्यावरण, तकनीक या नीति से जुड़े विषयों पर शोध करता है, तो उसके निष्कर्ष समाज को दिशा दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण शिक्षा पर शोध सरकारी विद्यालयों की दशा सुधार सकता है; जल संरक्षण पर शोध नीति निर्माण में सहायक हो सकता है; भारतीय भाषाओं पर शोध सांस्कृतिक विरासत को सहेज सकता है। इसलिए पीएचडी का मूल्य केवल विश्वविद्यालय परिसर तक सीमित नहीं होता। हालाँकि, यह भी स्वीकार करना होगा कि वर्तमान समय में शोध जगत अनेक चुनौतियों से घिरा है। कुछ स्थानों पर शोध की गुणवत्ता पर प्रश्न उठते हैं। कहीं मार्गदर्शन की कमी है, कहीं संसाधनों का अभाव, कहीं शोधार्थियों पर अनावश्यक प्रशासनिक बोझ, तो कहीं केवल औपचारिकता निभाने की प्रवृत्ति। कुछ लोग पीएचडी को मात्र पदोन्नति या नौकरी हेतु आवश्यक पात्रता मानकर करते हैं। इससे शोध की आत्मा प्रभावित होती है। जब उद्देश्य ज्ञान नहीं, केवल लाभ हो जाए, तो शोध सतही होने लगता है। इस समस्या का समाधान पीएचडी की आलोचना में नहीं, बल्कि उसकी गुणवत्ता सुधारने में है। विश्वविद्यालयों को शोध अवसंरचना मजबूत करनी होगी। प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, डिजिटल डेटाबेस, वित्तीय सहायता और सक्षम मार्गदर्शक उपलब्ध कराने होंगे। शोधार्थियों को लेखन, अनुसंधान पद्धति, नैतिकता और प्रकाशन की उचित प्रशिक्षण व्यवस्था मिलनी चाहिए। साथ ही, शोध मूल्यांकन केवल पृष्ठ संख्या या औपचारिक प्रस्तुति से नहीं, बल्कि वास्तविक योगदान से होना चाहिए। पीएचडी में मार्गदर्शक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक अच्छा मार्गदर्शक शोधार्थी को स्वतंत्र सोचने की प्रेरणा देता है, त्रुटियाँ बताता है, दिशा देता है और मानसिक संबल भी प्रदान करता है। वहीं यदि मार्गदर्शन कमजोर हो, तो प्रतिभाशाली विद्यार्थी भी भटक सकता है। इसलिए मार्गदर्शक चयन और उत्तरदायित्व की प्रणाली मजबूत होनी चाहिए। आज के डिजिटल युग में शोध का स्वरूप भी बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बिग डेटा, अंतर्विषयी अध्ययन, ओपन एक्सेस जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस और वैश्विक सहयोग ने पीएचडी को नई संभावनाएँ दी हैं। अब शोध केवल पुस्तकालय की अलमारियों तक सीमित नहीं रहा। एक भारतीय शोधार्थी विश्वस्तरीय सामग्री तक पहुँच सकता है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संवाद कर सकता है। यह अवसर है, पर इसके साथ चुनौती भी है कि सूचना की अधिकता में गुणवत्ता और मौलिकता कैसे बनाए रखें। पीएचडी का सबसे बड़ा गुण आलोचनात्मक चिंतन है। शोधार्थी हर तथ्य को प्रश्न की दृष्टि से देखता है। वह केवल स्वीकार नहीं करता, जाँचता है। वह केवल परंपरा नहीं दोहराता, तर्क मांगता है। यही दृष्टि समाज के लिए अमूल्य है। लोकतंत्र, नीति निर्माण, शिक्षा सुधार और सामाजिक विमर्श में ऐसे प्रशिक्षित मस्तिष्कों की आवश्यकता होती है जो भावनाओं से नहीं, प्रमाणों से सोचें। कई बार लोग पूछते हैं—पीएचडी करने से मिलता क्या है? इसका उत्तर वेतन, पद या उपाधि तक सीमित नहीं है। पीएचडी व्यक्ति को अनुशासन, धैर्य, लेखन क्षमता, प्रस्तुतीकरण कौशल, समस्या समाधान क्षमता और गहरी बौद्धिक परिपक्वता देती है। वह जटिल प्रश्नों को व्यवस्थित ढंग से समझना सीखता है। यह क्षमता जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी है। भारत जैसे युवा देश में शोध संस्कृति को मजबूत करना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम केवल उपभोक्ता बने रहेंगे और नया ज्ञान उत्पन्न नहीं करेंगे, तो वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पीछे रह जाएँगे। तकनीक, स्वास्थ्य, कृषि, रक्षा, पर्यावरण, भाषा और सामाजिक नीति—हर क्षेत्र में स्वदेशी शोध आवश्यक है। इसलिए पीएचडी को सम्मानजनक, गुणवत्तापूर्ण और उपयोगी बनाना राष्ट्रीय आवश्यकता है। समाज को भी पीएचडी धारकों को केवल 'डॉक्टर' कहकर सम्मानित करने या मजाक उड़ाने की दो चरम सीमाओं से बाहर आना होगा। हर पीएचडी श्रेष्ठ नहीं होती, पर हर पीएचडी निरर्थक भी नहीं होती। सही दृष्टिकोण यह है कि शोध को उसके योगदान, ईमानदारी और गुणवत्ता से आँका जाए। अंततः, पीएचडी थीसिस से आगे का सफर है। यह जिज्ञासा से आरंभ होकर ज्ञान सृजन पर समाप्त नहीं, बल्कि आगे बढ़ती यात्रा है। थीसिस उसकी मंज़िल नहीं, पड़ाव है। एक सच्चा शोधार्थी उपाधि मिलने के बाद भी प्रश्न पूछना नहीं छोड़ता। वह पढ़ता है, लिखता है, सोचता है और समाज को बेहतर बनाने की दिशा में योगदान देता है। इसलिए जब अगली बार कोई पूछे कि पीएचडी क्या है, तो उत्तर होना चाहिए—यह केवल डिग्री नहीं, बल्कि विचारों की तपस्या है; केवल थीसिस नहीं, बल्कि सत्य की खोज है; केवल उपाधि नहीं, बल्कि समाज और ज्ञान के प्रति दीर्घकालिक उत्तरदायित्व है।

जीवन में यूँ ही कुछ नहीं होता, हर घटना के पीछे एक कारण होता है: आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

परतापुर, बांसवाड़ा. शाबाश इंडिया

अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय श्री पियूष सागरजी महाराज ससंघ इन दिनों बांसवाड़ा में विराजमान हैं। उनके सानिध्य में विविध धार्मिक कार्यक्रम संपन्न हो रहे हैं। इसी क्रम में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने जीवन के गहन सिद्धांतों पर प्रकाश डाला। आचार्य श्री ने कहा कि जीवन में कुछ भी यूँ ही नहीं होता, प्रत्येक घटना के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। उन्होंने कहा कि आज के जीवन की सबसे बड़ी सफलता हमारा दृष्टिकोण है। हमारा मस्तिष्क शरीर रूपी मंदिर का शिखर है और उसकी सुरक्षा करना हमारा कर्तव्य है। मस्तिष्क वही प्रतिक्रिया देता है, जैसा हम सोचते और देखते हैं, इसलिए मानसिक रूप से स्वस्थ रहना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने स्वस्थ जीवन के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

दिनचर्या में सुधार आवश्यक

जो लोग समय पर उठते-सोते हैं, संतुलित आहार लेते हैं और नियमित व्यायाम करते हैं, वे शारीरिक और मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ रहते हैं। प्रतिदिन ६-८ घंटे की प्राकृतिक नींद लेना जरूरी है, क्योंकि नींद की कमी शरीर और मस्तिष्क दोनों को प्रभावित करती है।

स्वयं को स्वीकार करना सीखें

आचार्य श्री ने कहा कि व्यक्ति को स्वयं को उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए जैसा वह है। दूसरों की नकल करने से जीवन कठिन हो जाता है। आत्मस्वीकृति और आत्मप्रेम के साथ निरंतर आत्मविकास का प्रयास करना चाहिए तथा जीवन के निर्णय सोच-समझकर लेने चाहिए। दूसरों को खुश करने के लिए स्वयं को कष्ट देना उचित नहीं है।

आत्मविश्वास ही सबसे बड़ी शक्ति

उन्होंने कहा कि जीवन सुख-दुःख का मिश्रण है। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं, जिसके जीवन में कठिनाइयाँ न आई हों। असफलता, आर्थिक समस्या या रिश्तों में तनाव जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन इनके कारण जीवन से निराश नहीं होना चाहिए। आत्मविश्वास ही व्यक्ति को आगे बढ़ने की शक्ति देता है।

सकारात्मक सोच और दूरदृष्टि

आचार्य श्री ने बताया कि जीवन की गुणवत्ता हमारी सोच और दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। सकारात्मक साहित्य पढ़ना, अच्छे विचारों के संपर्क में रहना और प्रेरणादायक वातावरण में समय बिताना मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है।

भावनाओं का संतुलन आवश्यक

उन्होंने कहा कि भावनाएँ ही मनुष्य होने की पहचान हैं, लेकिन उनका संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। असंतुलित भावनाएँ न केवल संबंधों को प्रभावित करती हैं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता भी घटाती हैं। मन की शांति के लिए अपने विचारों को डायरी में लिखना या आत्मसंवाद करना उपयोगी होता है। अंत में आचार्य श्री ने संदेश दिया कि संयमित जीवन, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास ही सच्चे सुख और शांति का आधार हैं। **– नरेंद्र अजमेरा, पियूष कासलीवाल**

कोलकाता के हिंदुस्तान क्लब में भव्य आयोजन, गरिमामयी कार्यक्रम संपन्न

कोलकाता स्थित हिंदुस्तान क्लब में श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला महासभा, पश्चिम बंगाल के तत्वावधान में एक भव्य एवं गरिमामयी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संगीता जी द्वारा भगवान के स्मरण एवं सामूहिक ह्यॐ्ह्न उच्चारण के साथ हुआ, जिससे वातावरण आध्यात्मिकता से परिपूर्ण हो उठा। इसके पश्चात चित्र अनावरण का कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर से पधारी डॉ. ज्योत्स्ना जैन, महामंत्री रजनी जी तथा मंत्री एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुमन पाटनी जी के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ। आगे चलकर आठ ट्रस्टीगणों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। इन ट्रस्टीगणों में मीना पांड्या, सुमन कासलीवाल, राजकुमारी काला, संगीता जैन (उत्तरपाड़ा), रूबी टोंग्या, पदमा चांदुवार, रंजना पाटनी एवं मंजू पाटनी शामिल रहीं। इसके उपरांत श्रीमती पिंकी सबलावत एवं नेन्सी पांड्या द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया, जिसने पूरे सभागार को आध्यात्मिक भाव से ओतप्रोत कर दिया। कार्यक्रम के अगले चरण में संगीता जी ने सभी अतिथियों एवं पदाधिकारियों का परिचय कराते हुए उनका स्वागत किया। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर से पधारे पदाधिकारियों एवं गणमान्य सदस्यों को मंचासीन किया तथा उनके योगदान का उल्लेख करते हुए सभी का सम्मान किया। तत्पश्चात मंचासीन अतिथियों ने संगीता जी के 20 वर्षों के कार्यकाल की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए उनके समर्पण, नेतृत्व एवं उल्लेखनीय योगदान की सराहना की और उनका विशेष सम्मान किया। दिल्ली से पधारे धर्मेंद्र सेठी, विकास सेठी एवं डॉ. निर्मल जैन ने भी अपने प्रेरणादायक उद्बोधन से उपस्थित जनसमूह को मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यक्रम के अंतर्गत ट्रस्टीगणों को प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही सभी उपस्थित बहनों को उनके पदों की जानकारी दी गई तथा दुपट्टा एवं माला पहनाकर अभिनंदन किया गया। समग्र रूप से यह कार्यक्रम अत्यंत भव्य, सुव्यवस्थित एवं प्रेरणादायक रहा, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई और आयोजन की सफलता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आचार्य विनिश्चय सागर महाराज के दर्शन और पाद प्रक्षालन का जयपुर के यात्रियों को मिला सौभाग्य

देहरादून/जयपुर. शाबाश इंडिया। देहरादून के श्री दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर में जयपुर से आए एक यात्री दल को आचार्य 108 विनिश्चय सागर महाराज के दर्शन, पाद प्रक्षालन और आशीर्वचन प्राप्त करने का दुर्लभ अवसर मिला। इस दौरान जयपुर के प्रमुख श्रेष्ठी पदम जैन बिलाला और अशोक छाबड़ा को मंदिर में प्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ब्रह्मचारी श्रीपाल भैया एवं ब्रह्मचारी नमन भैया के सहयोग से आयोजित धर्म सभा में यात्रियों ने आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन किए और धार्मिक चर्चा में भाग लिया। इस अवसर पर राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा और जेएसजी मेट्रो की संस्थापक अध्यक्ष दीपिका जैन कोटखावदा ने वर्चुअल माध्यम से आचार्य श्री का आशीर्वाद ग्रहण किया। आचार्य श्री ने अपने संबोधन में कहा कि मन में उठने वाले विचारों को क्रियान्वित करने से पूर्व हमें उनके लाभ-हानि, पुण्य-पाप और धर्म-अधर्म का सूक्ष्म विचार अवश्य करना चाहिए। यात्री दल में शामिल पुष्पा बिलाला, निशा छाबड़ा, स्नेहलता काला, जे.के. जैन सहित अन्य सदस्यों ने भी गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त कर धर्म लाभ लिया।

कार्यकारिणी सभा में सामाजिक क्रियाकलापों पर हुआ मंथन

जयपुर. शाबाश इंडिया। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा की केंद्रीय कार्यकारिणी की सभा मुक्तेश्वर धाम (नैनीताल) में आयोजित हुई, जिसमें जयपुर सहित देशभर से बड़ी संख्या में सदस्यों ने भाग लिया। केंद्रीय महामंत्री महेश जैन ने बताया कि मुक्तेश्वर धाम समुद्र तल से लगभग 7500 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां प्रवास के दौरान जैन मंदिर में पूजा-अर्चना के साथ आर्यिका विकक्षा श्री माताजी के पादप्रक्षालन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कार्यकारिणी सभा में विभिन्न प्रांतों से आए सदस्यों ने सामाजिक गतिविधियों को और अधिक प्रभावी बनाने पर विस्तृत चर्चा की। सर्वसम्मति से विधवा सहायता कार्यक्रम को सामूहिक रूप से संचालित करने, देशभर की शाखाओं को सक्रिय करने तथा वर्तमान कार्यकारिणी का कार्यकाल एक वर्ष के लिए बढ़ाने का निर्णय लिया गया। सभा की अध्यक्षता विनोद कुमार जैन ने की। इस अवसर पर सुमित प्रकाश जैन, राजीव रत्न, चंद्रशेखर जैन, सुरेंद्र प्रकाश जैन एवं संजीव जैन सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। इस दौरान परम पूज्य वात्सल्य मूर्ति श्रावणी आर्यिका 105 विकक्षाश्री माताजी संघ, जो अष्टापद-बद्रीनाथ यात्रा पर अग्रसर था, के पादप्रक्षालन करने एवं मंदिर में उनके सानिध्य का लाभ लेने का अवसर भी सभी सदस्यों को प्राप्त हुआ। बैठक के साथ-साथ विभिन्न दर्शनीय स्थलों का भ्रमण भी किया गया। परिवारों के साथ प्रेम, अपनत्व और उत्साह के वातावरण में बिताए गए ये क्षण आपसी विश्वास और जुड़ाव को और मजबूत करने वाले रहे। **-विनोद जैन कोटखावदा**

जेएसजी 'संस्कार' की कार्यकारिणी बैठक संपन्न

आगामी कार्यक्रमों के लिए रोडमैप तैयार

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन सोशल ग्रुप 'संस्कार' की कार्यकारिणी बैठक मंगलवार को महावीर साधना एवं स्वाध्याय समिति, अंबा माता में आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता संस्थापक अध्यक्ष प्रकाश चंद्र कोठारी तथा अध्यक्ष डॉ. प्रमिला जैन ने की। बैठक में वर्ष 2025-26 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की समीक्षा की गई। कोषाध्यक्ष किरण पोखरना ने गत वर्ष का आय-व्यय विवरण प्रस्तुत किया, वहीं सचिव जितेंद्र धाकड़ ने वर्ष 2026-27 की सदस्यता स्थिति से सदस्यों को अवगत कराते हुए पिछले वर्ष के कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण दिया। बैठक के दौरान आगामी वर्ष के कार्यक्रमों की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई। सितंबर 2026 में प्रस्तावित केरल यात्रा पर विचार-विमर्श करते हुए सर्वसम्मति से यात्रा आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही 2 मई 2026 को 'संस्कार' ग्रुप द्वारा भव्य अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित आरएएस परीक्षा में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर उदयपुर का गौरव बढ़ाने वाले जैन समाज के जुहिल कोठारी एवं अर्चित कंठालिया का परिवार सहित अभिनंदन किया जाएगा। साथ ही ह्यसंस्कारह्न ग्रुप के उपाध्यक्ष विनोद लसोड़ के डूंगला मित्र मंडल के संस्थापक अध्यक्ष बनने पर उनका भी सम्मान करने का निर्णय लिया गया। बैठक में वर्ष 2027 में प्रस्तावित विदेश यात्रा के तहत यूरोप भ्रमण पर भी चर्चा की गई तथा सदस्यों को इसकी प्रारंभिक जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त आगामी वषार्काल में होटल राफेल्स भ्रमण कार्यक्रम आयोजित करने पर भी विचार किया गया। अध्यक्ष डॉ. प्रमिला जैन ने जेएसजी 'संस्कार' की नवीन परिवार निर्देशिका तैयार कर शीघ्र प्रकाशित करने का प्रस्ताव रखा, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक में राजेश सामर, राजेंद्र चोरड़िया, महेंद्र सहलोत, पवन मेहता, हिम्मत जैन, चंद्रकांता मेहता, चंद्रप्रकाश मेहता, प्रांशु धूपिया सहित अन्य सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। अंत में उपाध्यक्ष विनोद लसोड़ ने सभी कार्यकारिणी सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर '**शाबाश इंडिया**' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

श्रमिक दिवस पर श्रमिकों का तिलक-अक्षत व माल्यार्पण कर सम्मान

"श्रमिक के विकास से ही देश की तरक्की संभव है": डॉ. दुर्गा शंकर सैनी

कोटा. शाबाश इंडिया। अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर विज्ञाननगर स्थित ईएसआई डिस्पेंसरी में श्रमिकों के सम्मान में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। समाजसेवी एवं अखिल राजस्थान सेवारत चिकित्सक संघ के प्रदेश महासचिव डॉ. दुर्गा शंकर सैनी की पहल पर आयोजित इस कार्यक्रम में श्रमिकों का तिलक-अक्षत से स्वागत कर माल्यार्पण किया गया और उन्हें सम्मानित किया गया। सम्मान पाकर श्रमिकों के चेहरों पर विशेष खुशी देखने को मिली। उनका कहना था कि इस प्रकार के सम्मान से उन्हें अपने कार्य के प्रति नई ऊर्जा और उत्साह मिलता है। कार्यक्रम के दौरान श्रमिकों को रोली-चावल से तिलक लगाया गया, माल्यार्पण कर उनका मुंह मीठा कराया गया तथा फल भेंट कर शुभकामनाएं दी गईं। इस अवसर पर डॉ. दुर्गा शंकर सैनी ने कहा कि श्रमिक देश की प्रगति और नव निर्माण की सबसे मजबूत कड़ी हैं। उन्होंने कहा, ''श्रमिक के विकास से ही देश की तरक्की संभव है। उनके योगदान का सम्मान करना हम सभी का कर्तव्य है।'' कार्यक्रम में डॉ. रमेश चंद मीणा, महेश अग्रवाल, अजय मीणा, चंद्रकला, सुनीता, सुनील धाभाई, भूपेंद्र, अनीता श्रृंगी, अरुण सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य श्रमिकों का मनोबल बढ़ाना और समाज में श्रम के महत्व को रेखांकित करना रहा।

एन. के. पारीक के राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष बनने पर जयपुर में हुआ स्वागत

जयपुर. शाबाश इंडिया

ऑल इंडिया बैंक पेंशनर्स एंड रिटायरीज कॉन्फेडरेशन (ए आई बी पी ए आर सी) की 5वीं त्रैवार्षिक आम सभा का आयोजन 28 व 29 अप्रैल 2026 को एनार्कुलम नॉर्थ स्थित टाउन हॉल में संपन्न हुआ। सम्मेलन में देशभर के सेवानिवृत्त बैंक अधिकारियों के 23 सहयोगी संगठनों से 1500 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में ऑल इंडिया सेंट्रल बैंक रिटायर्ड ऑफिसर्स फेडरेशन के महासचिव एन. के. पारीक को ए आई बी पी ए आर सी का राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष वर्ष 2026-29 की अवधि के लिए निर्वाचित किया गया। इस अवसर पर पुनः निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष के. वी. आचार्य तथा महासचिव सुप्रिता सरकार सहित अन्य पदाधिकारियों ने एन. के. पारीक के कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। शुक्रवार को प्रातः जयपुर पहुंचने पर पारीक का सहयोगियों द्वारा आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर ए आई सी बी आर ओ एफ के मनोज शर्मा, बी. एस. राठौड़, पदम जैन बिलाला, शिवानंद शर्मा, ललित शर्मा, सीताराम खटीक सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। वहीं ए आई सी बी आर ओ एफ दिल्ली के ए. के. नागर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर निर्वाचन पर भी सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की। एन. के. पारीक ने बताया कि सम्मेलन में बैंक कर्मचारी पेंशन विनियम 1995 के विनियम 35(1) के अनुसार पेंशन अद्यतन के कार्यान्वयन तथा ए आई बी पी ए आर सी सहित अन्य संगठनों को भारतीय बैंक संघ के साथ सेवानिवृत्त कर्मचारियों के प्रतिनिधित्व हेतु वार्ता का दर्जा प्रदान करने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई।

श्रमिक दिवस पर जेडीबी कॉलेज के श्रमिकों को राशन किट देकर किया सम्मानित

✍ आजाद शेरवानी

कोटा. शाबाश इंडिया। अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर पूर्व छात्रा संगठन की कार्यकारिणी द्वारा जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या महाविद्यालय में कार्यरत श्रमिकों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के 14 श्रमिकों को आटा, दाल, चावल, तेल, शक्कर, चायपत्ती आदि आवश्यक खाद्य सामग्री के राशन किट वितरित किए गए। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए रचना चावला ने बताया कि इस आयोजन में संगठन की अध्यक्ष डॉ. संगीता सिंह, सचिव डॉ. प्राची दीक्षित, कोषाध्यक्ष कुसुम गुप्ता, उपाध्यक्ष हंसा त्यागी, संस्थापक सदस्य संध्या गुप्ता, संरक्षिका स्नेहलता साहनी, सहसचिव तनुजा खन्ना, श्रीमती शुभा गुप्ता एवं सह-कोषाध्यक्ष डॉ. अनीता मालव सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम में श्रीमती शुभा गुप्ता का विशेष योगदान रहा। अध्यक्ष डॉ. संगीता सिंह ने श्रमिकों की समाज में महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए उनका अभिनंदन किया और उनके योगदान के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर महाविद्यालय की कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. रेखा कालानी ने पूर्व छात्रा संगठन का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि संगठन हर अवसर पर महाविद्यालय का सहयोग करता है और इस प्रकार के आयोजन समाज में सकारात्मक संदेश देते हैं।

कमूल एनजीओ द्वारा "परिंडे बांधो, परिंदे बचाओ" अभियान की शुरूआत

सीकर. शाबाश इंडिया। कमलादेवी जनसेवा संस्थान, सीकर द्वारा संचालित कमूल एक सहारा एनजीओ ने गर्मियों में बेजुबान पक्षियों के लिए ''परिंडे बांधो, परिंदे बचाओ'' अभियान की शुरूआत की। अभियान के तहत शुक्रवार से शहर के विभिन्न छायादार स्थानों पर मिट्टी के परिंडे लगाए गए, ताकि पक्षियों को पीने के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध हो सके। एनजीओ के सदस्यों ने इन स्थानों पर नियमित रूप से पानी भरने की भी व्यवस्था सुनिश्चित की। इस अवसर पर कमूल एनजीओ के अध्यक्ष डॉ. एस. के. फगेड़िया ने बताया कि भीषण गर्मी और लू के कारण पक्षियों के अस्तित्व पर खतरा बढ़ जाता है। पानी की कमी के चलते अनेक पक्षियों की असमय मृत्यु हो जाती है। उन्होंने कहा कि हम अपने छोटे-छोटे प्रयासों से आसपास रहने वाले पक्षियों की प्यास बुझाकर उनकी जिंदगी बचा सकते हैं और पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अभियान के दौरान संस्थान के विकास फगेड़िया, जोगेंद्र बिजारणियां, शिवकरण, सुभाष जाखड़, विकास चौधरी, प्रकाश, पवन मोगा, कृष्ण बाजिया, जितेंद्र दायमा सहित अन्य टीम सदस्य उपस्थित रहे।

अच्छे कर्मों का फल सदैव अच्छा होता है : आचार्य विभव सागर महाराज

सुरेश चंद्र गांधी, जिला बांसवाड़ा (राजस्थान)

नौगामा. शाबाश इंडिया। परम पूज्य आचार्य गुरुवर विभव सागर महाराज विदुषी शिष्या सिद्धमति माताजी संघ सहित इन दिनों नौगामा नगर में विराजमान हैं। उनके सानिध्य में धार्मिक आयोजनों की पावन शृंखला निरंतर जारी है। आज प्रातः माताजी के सानिध्य में वागड़ के बड़े बाबा आदिनाथ भगवान एवं भगवान नेमिनाथ की शांतिधारा उनके मुखारविंद से संपन्न हुई। इस अवसर पर माताजी द्वारा ईष्टोपदेश ग्रंथ का वाचन भी किया जा रहा है, जिससे श्रद्धालु धर्मज्ञान का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। शाम को आचार्य भक्ति के पश्चात माताजी का मंगल प्रवचन आयोजित हुआ। उन्होंने जैन पाठशाला के विद्यार्थियों को नियमित रूप से अध्ययन हेतु आने का आह्वान किया तथा सभी अभिभावकों से निवेदन किया कि वे अपने बच्चों को जैन पाठशाला अवश्य भेजें, ताकि उनमें संस्कारों का विकास हो सके। अपने प्रवचन में आचार्य श्री ने कहा कि मनुष्य को सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए, क्योंकि अच्छे कर्मों का फल सदैव अच्छा ही मिलता है। उन्होंने बताया कि शुभ कर्मों से अगले भव में उत्तम गति प्राप्त होती है और जीव मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होता है, जबकि अशुभ कर्मों से जीव को नीच गति प्राप्त होती है।

विनोद जैन शास्त्री बने जैन सोशल ग्रुप मानसरोवर के अध्यक्ष

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन सोशल ग्रुप मानसरोवर में वर्ष 2026-27 के अध्यक्ष पद पर कार्यरत राजेंद्र कुमार शाह के आकस्मिक इस्तीफे के पश्चात नई कार्यकारिणी बैठक आयोजित की गई, जिसमें सर्वसम्मति से विनोद जैन शास्त्री को अध्यक्ष पद के लिए घोषित किया गया। बैठक में उपस्थित सभी कार्यकारिणी सदस्यों एवं सदस्यों ने इस निर्णय का समर्थन करते हुए विनोद जैन शास्त्री को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र शाह, संस्थापक अध्यक्ष भागचंद जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सौभाग मल जैन, पूर्व अध्यक्ष धनकुमार जैन, उपाध्यक्ष डॉ. सुरेश सोनी, संगठन मंत्री देवेंद्र गंगवाल, प्रचार मंत्री मुकेश जैन तथा सचिव सुनील जैन सहित अन्य पदाधिकारियों ने नव-नियुक्त अध्यक्ष का तिलक, माला एवं दुपट्टा पहनाकर भव्य स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान मंत्री सुनील जैन ने सभी सदस्यों से वर्ष की सदस्यता शुल्क समय पर जमा कराने का आग्रह किया। कार्यक्रम संयोजक सौभाग मल जैन ने बताया कि सांस्कृतिक मंत्री रानी पाटनी, पिंकी कासलीवाल एवं चंदा छाबड़ा द्वारा मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरूआत की गई, जिसके पश्चात विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियां एवं मनोरंजक खेल आयोजित किए गए। इसके बाद सभी सदस्यों ने स्वप्न लोक रिजॉर्ट्स में स्विमिंग एवं रेन डांस का आनंद लिया। अंत में णमोकार मंत्र के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

सबसे बड़ा प्रदूषण भाव प्रदूषण है: वैज्ञानिक धमार्चार्य कनक नंदी गुरुदेव

अजीत कोठिया, डडूका

भिलुड़ा के समीप स्थित शिवगौरी आश्रम से आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबीनार में सिद्धांत चक्रवर्ती वैज्ञानिक धर्माचार्य कनक नंदी गुरुदेव ने कहा कि संसार में सबसे बड़ा प्रदूषण बाह्य नहीं, बल्कि भाव प्रदूषण है। उन्होंने प्राचीन आचार्यों के सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए मनोविज्ञान, प्राणी विज्ञान और कर्म सिद्धांत के उदाहरणों के माध्यम से चित्त की शक्ति को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि चित्त रूपी हाथी अत्यंत प्रबल होता है। यदि उसे नियंत्रित नहीं किया जाए तो वह संयम रूपी घर को नष्ट कर सकता है। सामान्यतः हाथी बुद्धिमान, शाकाहारी और शांत स्वभाव का होता है, लेकिन काम-वेदना के प्रभाव में वह अत्यंत उग्र और क्रूर हो जाता है। इसी प्रकार मनुष्य का चित्त भी असंयमित होने पर उसे पाप की ओर ले जाता है। गुरुदेव ने स्पष्ट किया कि जिसका भाव उदार और शुभ नहीं होता, वह अनजाने में अनेक पाप करता है। युद्ध, झगड़े और संघर्ष पहले मन में उत्पन्न होते हैं, बाद में व्यवहार में दिखाई देते हैं। आज धर्म के नाम पर भी क्रूरता और असंयम बढ़ रहा है, जो वास्तविक धर्म नहीं बल्कि अधर्म है। उन्होंने चित्त को चंचल बंदर की उपमा देते हुए कहा कि मन निरंतर भटकता रहता है और गलत चिंतन, निंदा एवं चुगली के माध्यम से पाप का बंध करता है। मन की चंचलता ही सबसे बड़ा कारण है, जिससे व्यक्ति अधिक पाप करता है। गुरुदेव ने कठोर शब्दों में कहा कि जो व्यक्ति अपने मन को नियंत्रित नहीं कर सकता, वह यदि धर्म, ध्यान, तप या त्याग की चर्चा करता है, तो वह स्वयं को ही लज्जित करता है। वास्तविक साधना चित्त पर विजय प्राप्त करने में है, न कि केवल बाह्य आडंबर में। उन्होंने कहा कि बाह्य त्याग का उद्देश्य अंतर्मन की शुद्धि है। जब तक भाव शुद्ध नहीं होंगे, तब तक चित्त स्थिर नहीं हो सकता। भाव शुद्ध होने पर ही कषाय, क्रोध, झगड़े और वैश्विक समस्याएं समाप्त हो सकती हैं। चित्त की शुद्धि के बिना किसी प्रकार की आंतरिक शांति या उपचार संभव नहीं है। गुरुदेव ने यह भी कहा कि जिनके मन में ख्याति, पूजा और लाभ की इच्छा रहती है, उनका चित्त शुद्ध नहीं होता। ऐसे व्यक्ति वास्तविक साधना नहीं कर सकते। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि शेर, चीता या अन्य शिकारी प्राणी शिकार से पहले लंबे समय तक स्थिर रहते हैं, लेकिन वह ध्यान नहीं है। उसी प्रकार मांसाहारी जीवों का लंबे अंतराल के बाद भोजन करना उपवास नहीं कहा जा सकता। अंत में उन्होंने संदेश दिया कि जीवन में सच्ची शांति और संतुलन के लिए भावों की शुद्धि आवश्यक है।

संकलनः विजय लक्ष्मी गोदावत, सागवाड़ा

मजदूर दिवस पर मजदूरों की दशा व दिशा पर ऑनलाइन गोष्ठी आयोजित

डेह/नागौर. शाबाश इंडिया

अखिल भारतीय राजस्थानी भाषा मान्यता संघर्ष समिति एवं नेम प्रकाशन, डेह के संयुक्त तत्वावधान में विश्व मजदूर दिवस के अवसर पर मजदूरों की दशा एवं दिशा विषय पर पवन पहाड़िया की अध्यक्षता में ऑनलाइन गोष्ठी आयोजित की गई। गोष्ठी में रोडवेज यूनियन नागौर शाखा के पूर्व अध्यक्ष एवं 'मजदूर सतसई' के प्रणेता, राजस्थानी के वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मण

दान कविया ने कहा कि वर्तमान समय में विश्व का मजदूर अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है। मशीनों के बढ़ते उपयोग के कारण श्रमिकों के रोजगार के अवसर लगातार कम हो रहे हैं। पहले जहां बड़े निर्माण कार्यों–जैसे कल-कारखाने, बांध, पुलिया, सड़क, भवन एवं रेल परियोजनाओं–में हजारों मजदूरों की आवश्यकता होती थी, वहीं अब मशीनरी के कारण मजदूरों की भूमिका सीमित हो गई है। उन्होंने कहा कि आज ऐसे कार्यों में दस प्रतिशत मजदूरों को भी पर्याप्त अवसर नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने अपनी कृति 'मजदूर सतसई' के माध्यम से जनमानस एवं सरकार से मजदूरों के हितों की रक्षा का आग्रह किया है, जिसमें विश्व के मजदूरों की स्थिति पर काव्यात्मक रूप से प्रकाश डाला गया है। राजस्थानी युवा गीतकार प्रहलाद सिंह झोरड़ा ने कहा कि बढ़ती मशीनरी निश्चित रूप से चिंता का विषय है, लेकिन यदि श्रमिकों में कार्य करने की लगन हो तो उन्हें रोजगार के अवसर मिल ही जाते हैं। श्रीराम वैष्णव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पुरुषार्थ और सकारात्मक प्रवृत्ति से व्यक्ति अपने रोजगार के रास्ते स्वयं बना सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि गांवों और शहरों में आज भी अनेक कार्य ऐसे हैं, जो पूर्णतः श्रमिकों पर ही निर्भर हैं। गोष्ठी के अध्यक्ष पवन पहाड़िया ने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों में मजदूरों की आवश्यकता हमेशा बनी रही है और भविष्य में भी बनी रहेगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि सभी कार्य मशीनों के भरोसे संभव नहीं हैं, क्योंकि मशीनों के संचालन के लिए भी मानव श्रम आवश्यक है। साथ ही उन्होंने सरकार का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मजदूरों को वर्ष में 125 दिनों का रोजगार उपलब्ध कराने जैसी योजनाओं से उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

अमृतम् जल सेवा मंदिर का उद्घाटन

जयपुर. शाबाश इंडिया। मानव सेवा ट्रस्ट, राजस्थान द्वारा मजदूर दिवस एवं बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर सीतापुरा स्थित रीको औद्योगिक क्षेत्र में ''अमृतम् (प्रभु कृपा) जल सेवा मंदिर'' का भव्य उद्घाटन किया गया। इस पहल का उद्देश्य भीषण गर्मी के दौरान श्रमिकों, राहगीरों एवं आमजन को शुद्ध एवं शीतल पेयजल उपलब्ध कराना है। ट्रस्ट अध्यक्ष, सेवानिवृत्त आरएएस अधिकारी एन.एल. वर्मा ने बताया कि मजदूर दिवस पर श्रमिकों के सम्मान तथा बुद्ध पूर्णिमा के करुणा, सेवा और मानवता के संदेश को ध्यान में रखते हुए यह जल सेवा मंदिर समाज के लिए एक प्रेरणादायक पहल है। स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर के वरिष्ठ आचार्य, चिकित्सक, ट्रस्ट सदस्य एवं मीडिया प्रभारी प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना ने जानकारी दी कि ट्रस्ट द्वारा अब तक तीन स्थानों–चेतक मार्ग, इंडिया गेट एवं एनएवी सर्किल (सीतापुरा)–पर अमृतम्-जल सेवा मंदिर स्थापित किए जा चुके हैं। इन केंद्रों पर प्रतिदिन आरओ का शुद्ध पानी मटकों में भरवाया जाता है तथा पानी पिलाने के लिए कर्मियों की भी व्यवस्था की गई है। यह जल सेवा केंद्र विशेष रूप से औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों के लिए राहत प्रदान करेगा, जहां गर्मी के दिनों में पेयजल की आवश्यकता अत्यधिक बढ़ जाती है। आयोजन समिति के अनुसार, यह सेवा निरंतर संचालित रहेगी ताकि अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके। इस अवसर पर संरक्षक ओम प्रकाश पोद्दार, ओचित्य पोद्दार, दुर्गा वर्मा, कौशल सत्यार्थी, धर्मपाल, धर्मेश, दीपिका, लवीना, मनीष, रूपेंद्र, धर्मेन्द्र आलोरिया सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं श्रमिक उपस्थित रहे।

15 साल बाद जयपुर की धरा पर गणिनी आर्यिका जिन देवी माताजी का भव्य मंगल प्रवेश; श्रद्धालुओं ने लिया आशीर्वाद

जयपुर. शाबाश इंडिया

दीर्घ तपस्वी आचार्य रत्न बाहुबली महाराज की पट्ट शिष्या गणिनी आर्यिका 105 श्री जिन देवी माताजी ससंघ का 15 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद जयपुर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। श्रद्धालुओं ने पलक-पावड़े बिछाकर ससंघ की अगवानी की और गुरु माँ का आशीर्वाद प्राप्त किया।

145 दिन और 2000 किलोमीटर की कठिन पदयात्रा

महाराष्ट्र के कोल्हापुर (इचलकरंजी) से 7 दिसंबर 2025 को शुरू हुई यह मंगल पदयात्रा लगभग 145 दिनों में 2000 किलोमीटर की दूरी तय कर जयपुर पहुँची है। इस यात्रा के दौरान आर्यिका संघ ने सिद्ध क्षेत्र मांगी तुंगी, सूरत, वडोदरा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा और पदमपुरा जैसे प्रमुख तीर्थों से होते हुए जयपुर में प्रवेश किया। संघ में क्षुल्लिका मंगल मति माताजी और संचालिका बाल ब्रह्मचारिणी स्नेहा दीदी भी शामिल हैं।

धर्म सभा और मंगल प्रवचन

तारों की कूट स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर और दुर्गापुरा स्थित श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन मंदिर में भव्य अगवानी के पश्चात आयोजित धर्म सभा में माताजी ने अपने मंगल प्रवचन दिए। उन्होंने कहा कि आज पूरे देश में जैन संस्कृति और धर्म की प्रभावना चलते-फिरते तीर्थ रूप दिगंबर मुनि और आर्यिका संघों के कारण ही हो रही है। श्रावकों को अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए धर्म के सिद्धांतों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

आगामी कार्यक्रम: जवाहर नगर और सेठी कॉलोनी में प्रवेश आर्यिका संघ का प्रवास कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा।

शनिवार, 2 मई: दुर्गापुरा जैन मंदिर में प्रातः अभिषेक और शांतिधारा के बाद धर्म सभा होगी। सायंकाल यहाँ से मंगल विहार होकर जवाहर नगर दिगंबर जैन मंदिर में भव्य प्रवेश और रात्रि विश्राम होगा।

रविवार, 3 मई: प्रातः 6:00 बजे जवाहर नगर से विहार कर सेठी कॉलोनी दिगंबर जैन मंदिर में गाजे-बाजे के साथ भव्य मंगल प्रवेश होगा। उल्लेखनीय है कि सेठी कॉलोनी में माताजी का 15 साल पहले (वर्ष 2011 में) वर्षायोग संपन्न हुआ था।

प्रमुख गणमान्य जनों की उपस्थिति

इस अवसर पर राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा, प्रवीण चंद्र छाबड़ा, दीन दयाल पाटनी (अध्यक्ष, सेठी कॉलोनी मंदिर), धर्मी चंद कासलीवाल, धनेश सेठी, नवीन जैन, दीपिका जैन कोटखावदा और नीतू मुशर्रफ सहित बड़ी संख्या में समाज के श्रेष्ठीजन और महिला मंडल की सदस्य उपस्थित रहीं।

जयपुर यात्रा दल ने चन्द्रांचल स्वस्ति तीर्थ प्यावड़ी में भगवान चन्द्रप्रभु के दर्शन कर अतिशय देखा, सदस्याओं का हुआ सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर से गए जैन श्रावक-श्राविकाओं के एक यात्रा दल ने निवाई के समीप स्थित श्री दिगम्बर जैन चन्द्रांचल स्वस्ति तीर्थ, प्यावड़ी (पीपलू) में भगवान चन्द्रप्रभु की अतिशयकारी प्राचीन प्रतिमा के दर्शन कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर मंदिर में प्रत्येक पूर्णिमा पर होने वाले केसर वर्षा के अद्भुत दृश्य का भी श्रद्धालुओं ने साक्षात अनुभव किया। राजस्थान जैन युवा महासभा, जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि इस अवसर पर भगवान चन्द्रप्रभु के प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा का पुण्यार्जन शक्तिनगर निवासी आलोक-अनिता अजमेरा परिवार–विवेक, गरिमा, अमन, विहान एवं विहू–को प्राप्त हुआ। इस दौरान पुलक मंच की अध्यक्ष इंदिरा बड़जात्या सहित सारिका जैन, मीनाक्षी जैन, गुणमाला जैन, सुमंगला जैन एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। यात्रा दल की महिला सदस्याओं का सम्मान भी किया गया। पुलक मंच परिवार की महामंत्री सुनीता अजमेरा (शक्तिनगर) ने बताया कि चन्द्रांचल स्वस्ति तीर्थ प्यावड़ी में भगवान चन्द्रप्रभु का मार्जन करने पर सफेद कपड़ा केसरयुक्त पीले रंग में परिवर्तित हो गया, जिसे श्रद्धालुओं ने प्रत्यक्ष रूप से देखा। इस अवसर पर 100 से अधिक श्रद्धालु उपस्थित थे। विनोद जैन कोटखावदा ने जानकारी दी कि गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी के निर्देशन में यहां भव्य जिनमंदिर का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जिसका शिलान्यास 23 जनवरी 2026 को उनके सानिध्य में किया गया था। उस समय भी चांदी के सिक्के एवं केसर के रूप में अतिशय देखने को मिला था। पूर्णिमा महामहोत्सव के दिन श्रद्धालुओं को पुनः साक्षात अतिशय के दर्शन हुए, जब भगवान चन्द्रप्रभु का मार्जन करते ही सफेद वस्त्र केसरयुक्त पीले रंग में परिवर्तित हो गया। यात्रा दल ने प्यावड़ी से प्रस्थान कर मार्ग में अन्य तीर्थ क्षेत्रों के भी दर्शन किए और दोपहर बाद जयपुर लौट आया।

आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज का आज खानिया स्थित संघीजी की नसिया में भव्य मंगल प्रवेश

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन समाज के लिए आज का दिन अत्यंत ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण है। परम पूज्य आचार्य भगवन 108 प्रज्ञा सागर महाराज का 16 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद शनिवार को चूलगिरी के नीचे खानिया स्थित संघीजी की नसिया में भव्य मंगल प्रवेश होगा। राजस्थान जैन युवा महासभा, जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि पूज्य गुरुदेव प्रातः 5:30 बजे जवाहर नगर जैन मंदिर से पदविहार (पदयात्रा) प्रारंभ करेंगे। यह मंगल विहार श्रद्धालुओं की भक्ति और उत्साहपूर्ण वातावरण के बीच सेठी कॉलोनी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर के दर्शन करते हुए प्रातः 6:30 बजे खानिया स्थित संघीजी की नसिया में भव्य मंगल प्रवेश के साथ संपन्न होगा। इस दिव्य यात्रा में हजारों श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2009 में पूज्य गुरुदेव का यहां ऐतिहासिक मंगल प्रवेश हुआ था, जिसकी स्मृतियाँ आज भी समाज के हृदय में जीवंत हैं। हाल ही में आचार्य श्री का जवाहर नगर में 22 दिवसीय मंगल प्रवास सम्पन्न हुआ, जिसमें उन्होंने धर्म, संयम, आत्मकल्याण एवं संस्कारों पर प्रेरणादायी प्रवचन दिए। आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज अपने गहन ज्ञान, ओजस्वी वाणी और सरल व्यक्तित्व के लिए विख्यात हैं। वे अहिंसा, संयम एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रबल प्रेरक हैं और उनके सानिध्य में देशभर में लाखों वृक्षारोपण जैसे महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हुए हैं। अरावली पर्वतमाला की गोद में स्थित चूलगिरी दिगम्बर जैन मंदिर एक अत्यंत रमणीय एवं पवित्र तीर्थ है, जहां विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमा श्रद्धालुओं को शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करती है। विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार, रविवार 3 मई को पूज्य गुरुदेव पहाड़ी पर स्थित दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर समस्त समाज को पुण्यलाभ प्रदान करेंगे। राष्ट्रीय गुरु आस्था परिवार युवा प्रकोष्ठ, राजस्थान प्रदेश के अध्यक्ष चेतन जैन निमोडिया ने अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करने का आह्वान किया है।

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप द्वारा 18वें वर्ष ग्रीष्मकालीन जल सेवा का शुभारंभ

गंगापुर सिटी। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप, गंगापुर सिटी द्वारा रेल यात्रियों की सुविधा हेतु लगातार 18वें वर्ष ग्रीष्मकालीन निःशुल्क जल सेवा का संचालन किया जा रहा है। इस वर्ष जल सेवा का विधिवत उद्घाटन दिनांक 3 मई 2026, रविवार को प्रातः 10:00 बजे गंगापुर सिटी रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 1 पर किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मनोज जी एवं डॉ. सुलेखा जी जैन होंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अनिल जी जैन XEN रेल्वे, श्री पीके तिवारी जी ADEN तथा श्री अशोक जी मीणा SI/RPF उपस्थित रहेंगे।संस्था के संस्थापक अध्यक्ष श्री सुमेर जैन ने बताया कि भीषण गर्मी में रेल यात्रियों को शीतल जल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यह सेवा प्रतिवर्ष संचालित की जाती है। यह सेवा समूह के सदस्यों के सहयोग से ग्रीष्म ऋतु पर्यंत जारी रहेगी।इस अवसर पर जल सेवा संयोजक श्री धर्मेंद्र जैन पांड्या, श्री योगेंद्र जैन, श्री दीपक गोयल सहित अध्यक्ष श्री नरेंद्र जी जैन, सचिव श्री महेश जैन, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष जैन सोगानी एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहेंगे। संस्था ने शहर के सभी धर्मप्रेमी बंधुओं एवं गणमान्य नागरिकों से उद्घाटन समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पधारकर पुण्य कार्य में सहभागी बनने की अपील की है।

प्रचंड गर्मी भी नहीं रोक सकी रक्तदान का जज्बा, शिविर में 668 यूनिट रक्त संग्रह

रक्तदान शिविर के साथ नेत्र जांच व ई-श्रमिक कार्ड भी बनाए गए

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर भीलवाड़ा मजदूर संघ (टेक्सटाइल लेबर) द्वारा रीको फोर्थ फेज में शुक्रवार को विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ प्रातः 9:15 बजे संकटमोचन हनुमान मंदिर के महामंडलेश्वर बाबूगिरीजी महाराज के सान्निध्य में राम दरबार की तस्वीर पर माल्यार्पण कर किया गया। शाम 7 बजे तक चले इस शिविर में प्रचंड गर्मी के बावजूद रक्तदान के प्रति श्रमिकों और युवाओं का उत्साह देखने लायक रहा। सुबह से ही रक्तदाताओं का आना शुरू हो गया, जो पूरे दिन जारी रहा। शिविर में युवाओं से लेकर 55-60 वर्ष तक के श्रमिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और कुल 668 यूनिट रक्तदान किया गया। रक्तदान के लिए शिविर में दो दर्जन से अधिक बेड लगाए गए थे तथा प्रत्येक बेड पर कूलर की व्यवस्था कर गर्मी से राहत दी गई। रक्त संग्रह के लिए महात्मा गांधी चिकित्सालय, रामस्नेही चिकित्सालय, अरिहंत चिकित्सालय, भीलवाड़ा ब्लड बैंक एवं पोरवाल ब्लड बैंक की टीमों ने सेवाएं दीं। शिविर में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों में पूर्व सांसद सुभाष बहेड़िया, पूर्व मंत्री रामलाल जाट, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा, नगर निगम के पूर्व महापौर राकेश पाठक, नगर परिषद के पूर्व सभापति ओम नराणीवाल, भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य आजाद शर्मा, शांतिप्रकाश मोहता, योगेंद्र सिंह कटार, राकेश ओझा सहित कई जनप्रतिनिधि एवं उद्योगपति शामिल रहे। अतिथियों का स्वागत मजदूर संघ के अध्यक्ष पन्नालाल चौधरी एवं पदाधिकारियों ने किया। मजदूर संघ के उपाध्यक्ष नंदलाल माली ने बताया कि शिविर में रक्तदान के साथ-साथ नेत्र जांच शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें रामस्नेही चिकित्सालय की नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रतिष्ठा छीपा एवं उनकी टीम ने श्रमिकों की जांच कर परामर्श दिया। साथ ही श्रम विभाग की टीम ने मौके पर ही ई-श्रमिक कार्ड बनाने का कार्य भी किया। रक्तदाताओं में कई नियमित और नए दाताओं ने भाग लिया। मोहन चौधरी ने 22वीं बार रक्तदान कर प्रेरणा दी, वहीं पहली बार रक्तदान करने वाले युवा धर्मेंद्र प्रजापत एवं महिला रक्तदाता पूजा माली भी शामिल रहीं। शिविर के सफल आयोजन में संघ के सचिव विक्रम सिंह, सह सचिव राजूराम जाट, कोषाध्यक्ष सुखराम प्रजापत सहित कार्यकारिणी के अनेक सदस्यों एवं श्रमिकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

हर वर्ष मजदूर दिवस पर होता है आयोजन

भीलवाड़ा मजदूर संघ (टेक्सटाइल लेबर) द्वारा पिछले 16 वर्षों से मजदूर दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। कोविड काल के दो वर्षों को छोड़कर यह परंपरा लगातार जारी है। इस वर्ष संघ द्वारा 14वें रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। श्रमिकों में इस शिविर के प्रति विशेष उत्साह रहता है और कई दाता हर वर्ष नियमित रूप से रक्तदान करते हैं।

महावीर इंटरनेशनल द्वारा बुद्ध पूर्णिमा पर गौ सेवा कार्य सम्पन्न

अजमेर (रोहित जैन)

महावीर इंटरनेशनल अजयमेरु एवं पद्मावती केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर जी ब्लॉक, माकड़वाली रोड, अजमेर पर गायों को हरा चारा खिलाने का सेवा कार्य सम्पन्न हुआ। रीजन-3 के उपनिदेशक (प्रचार-प्रसार) कमल गंगवाल एवं अजयमेरु केंद्र के चेयरमैन गजेंद्र पंचोली ने जानकारी देते हुए बताया कि इस सेवा कार्य का उद्देश्य जीव दया के संदेश को समाज तक पहुँचाना तथा लोगों को सेवा के प्रति प्रेरित करना है। महावीर इंटरनेशनल पद्मावती केंद्र की चेयरपर्सन निक्की जैन एवं सचिव निकिता पंचोली ने बताया कि इस प्रकार के सेवा कार्यों को आगे भी निरंतर जारी रखा जाएगा। इस सेवा कार्य में कमल गंगवाल, गजेंद्र पंचोली, विजय जैन पाण्ड्या, गुंजन माथुर, निक्की जैन, निकिता पंचोली, सुमन अग्रवाल, मोनिका ढलवालएवं वंदना राजपूत सहित अनेक सदस्यों ने सहभागिता निभाई।

मीणा समाज के 51 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे

राज्यपाल सहित कई विशिष्ट अतिथि रहे उपस्थित

जयपुर. शाबाश इंडिया। जय मीनेश शिक्षण एवं विकास संस्थान के तत्वावधान में पीपल पूर्णिमा के अवसर पर समाज का 16वां सामूहिक विवाह सम्मेलन हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ संपन्न हुआ। फागी स्थित जय मीनेश महाविद्यालय परिसर में आयोजित इस भव्य समारोह में 51 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे। समारोह में राजस्थान के राज्यपाल किशन राव बागड़े, सेवानिवृत्त आईआरएस अधिकारी के.सी. घुमरिया, पूर्व विधायक कन्हैया लाल मीणा एवं बाबू लाल नागर अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इसके साथ ही कई जनप्रतिनिधि, समाज के राष्ट्रीय स्तर के नेतृत्वकर्ता एवं क्षेत्रीय वरिष्ठजन भी बड़ी संख्या में शामिल हुए। कार्यक्रम में रतन लाल, धर्मपाल, कैलाश मीणा सहित अनेक आईएएस, आईपीएस, आरएएस एवं आरपीएस अधिकारियों ने भी सहभागिता कर नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद प्रदान किया। संस्थान के अध्यक्ष एवं सेवानिवृत्त आईआरएस अधिकारी के.सी. घुमरिया ने बताया कि इस सामूहिक विवाह सम्मेलन में राजस्थान के विभिन्न जिलों से बारातें पहुंचीं, जिनमें समाज के गणमान्य नागरिकों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा अब तक 1002 से अधिक जरूरतमंद आदिवासी परिवारों के युवक-युवतियों का विवाह संपन्न कराया जा चुका है और यह सेवा कार्य निरंतर जारी है। उन्होंने यह भी बताया कि आयोजन को सफल बनाने में संस्थान के संरक्षक गीताराम मीणा, युवा समिति के अध्यक्ष रामराय मीणा सहित समाज के अनेक वरिष्ठजनों का विशेष योगदान रहा। समारोह में सभी 51 नवविवाहित दुल्हनों को समाज के भामाशाहों द्वारा आवश्यक घरेलू सामग्री एवं उपहार प्रदान किए गए, जिससे उनके नए जीवन की सुखद शुरूआत हो सके।

|| श्री शान्तिनाथाय नमः ||

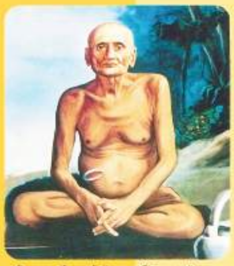
चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज

बेगस चलो

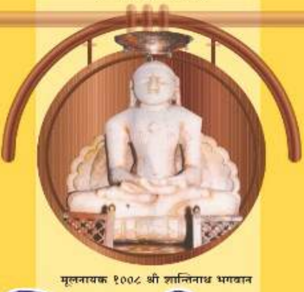
मूलनायक १००८ श्री शान्तिनाथ भगवान

बेगस चलो

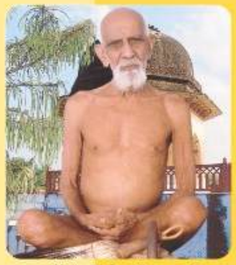
परम पूज्य तपोनिधि मुनिवर्य 108 श्री गुणसागर जी महाराज

श्री १००८ शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर

ग्राम बेगस, जिला-जयपुर (राज.)

- आमंत्रण पत्रिका -

आदरणीय धर्मानुरागी बन्धुवर,
सादर जय जिनेन्द्र।

जयपुर नगर के पश्चिमोत्तर भाग में अतिशयकारी देवाधिदेव श्री 1008 शान्तिनाथ भगवान की अति प्राचीन श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, ग्राम बेगस में 467 वर्ष से भी अधिक प्राचीन धरोहर है। मन्दिरजी की प्राचीनता से जर्जर युक्त अवस्था देखकर मन्दिरजी का पूर्णतया जीर्णोद्धार कर वास्तुकला के अनुरूप नूतन स्वरूप प्रदान कर गगन चुम्बी शिखर व तीन वेदीयों से युक्त भव्य आकार प्रदान किया गया। जिसकी वेदी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न करवाया गया। मन्दिरजी का 15वाँ वार्षिकोत्सव **रविवार-दिनांक 3 मई, 2026** को निम्नांकित कार्यक्रमानुसार विधानाचार्य श्री प्रद्युम्नकुमारजी जैन 'शास्त्री' जयपुर के कुशल निर्देशन में आयोजित है।

अतः आपसे सानुरोध निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधारकर सातिशय पुण्यार्जन का अवसर प्राप्त करें।

15वाँ वार्षिकोत्सव

रविवार, दिनांक 3 मई, 2026

- मांगलिक कार्यक्रम -

प्रातः 8.15 बजे- जिनेन्द्र अभिषेक, शान्तिधारा, नित्य नियम, ध्वजारोहण, दीप प्रज्जवलन, शान्ति विधान पूजन, अतिथि सम्मान, कलशाभिषेक, माल के तत्पश्चात् वात्सल्य सहभोज

पावन आशीर्वाद
पूज्य उपाध्याय श्री 108 ऊर्जयन्तसागर जी मुनिराज

वास्तुविज्ञ
जैन गौरव श्री राजकुमार जी कोठ्यारी

क्रियाचार्य -
पं. प्रद्युम्नकुमारजी शास्त्री

झण्डारोहणकर्त्ता

श्रीमती सुमनलता जी जैन
श्री प्रदीप जी जैन, श्रीमती खुशबू जी जैन, श्री किशना जी जैन
श्री निहाल जी जैन सौगानी सिनोदियावाले खातीपुरा, जयपुर

दीप प्रज्वनकर्त्ता

श्रेष्ठी श्री नरेश जी नीना जी कासलीवाल
श्री प्रियांक जी प्रियांशी जी कासलीवाल
प्रचार संयोजक त्रिवेणी नगर, जयपुर
राजस्थान प्रान्त, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्

गौरवमयी अतिथि

श्रेष्ठी श्री जे.के.जैन
(कालाडेरावाले),
नेमी सागर कॉलोनी

सौधर्म इन्द्र

श्रेष्ठी श्री चेतन कुमार जी
श्रीमती रेखा जी छाबड़ा
(बगरु, बेगस वाले),
लाल कोठी, जयपुर

मुख्य अतिथि

श्री गजेन्द्र कुमार जी, प्रवीण जी - प्रिया जी
विकास जी-मेनका जी, अक्षित जी, तनिष्क जी
काशवी जी, लाव्या जी एवं समस्त बड़जात्या परिवार
(कामां वाले), वैशाली नगर, जयपुर

नवनिर्मित पाण्डाल एवं डॉम के पुण्यार्जक एवं लोकर्पणकर्त्ता परिवार

श्रेष्ठी श्री अशोक कुमार जी- शकुन्तला देवी
श्री अंकित जी प्रियंका जी, आदिश जी जिनेशा जी जैन
चाँदवाड़ परिवार, कीर्ति नगर

विशिष्ट अतिथि

श्रेष्ठी श्री राजेश जी काला
श्रीमती रेणु जी काला

विशिष्ट अतिथि
श्रेष्ठी श्रीमती मनभरदेवी जी,
भागचन्द जी, राजकुमारी जी,
सौरभ जी,
प्रियंका जी
भव्यांश जी जैन

पूजन सामग्री पुण्यार्जक

स्व. श्री प्रेमचन्द जी एवं श्री धर्मचन्द जी बड़जात्या की पुण्य स्मृति में श्रीमती चन्द्रकान्ता जी, श्रीमती मंजू जी, पवन जी, हर्षित जी, दीपाली जी, प्रिस बड़जात्या
रेनवाल माँझी वाले, वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर

आजीवन संरक्षकगण

1. श्री जयकुमार जी बागड़िया 'कोटावाले' नेमीसागर
2. श्रीमती कमला देवी गंगवाल 'झरियावाले' नेमीसागर
3. श्रीमती कमला देवी छाबड़ा 'बेगसवाले'
4. श्रीमती मुन्ना देवी छाबड़ा 'बेगसवाले'
5. श्रीमती सुशीला देवी छाबड़ा 'बेगसवाले'
6. श्रीमती प्रेमदेवी छाबड़ा 'बेगसवाले'
7. श्रीमती अनोप देवी छाबड़ा 'बेगसवाले'
8. श्रीमती रेखा छाबड़ा 'बेगसवाले'
9. श्रीमती मन्जू छाबड़ा 'बेगसवाले'
10. श्रीमती स्नेहलता छाबड़ा 'बेगसवाले'
11. श्रीमती अंजू छाबड़ा 'बेगसवाले'
12. श्री रजत छाबड़ा 'बेगसवाले'
13. श्री पदमचन्द बेगस्या, जयपुर
14. श्री मोहनलाल बेगस्या, जयपुर
15. श्रीमती सूरज देवी बेगस्या, जयपुर
16. श्रीमती विजया देवी बेगस्या, जयपुर
17. श्रीमती तारादेवी बेगस्या, जयपुर
18. श्रीमती कान्ता पहाड़िया 'बगरुवाले'
19. श्रीमती नन्दा पहाड़िया 'बगरुवाले'
20. श्रीमती रंजना पहाड़िया 'बगरुवाले'
21. कु. पर्ल पहाड़िया 'बगरुवाले'
22. श्रीमती बरखा पाटनी, मुम्बई
23 श्रीमती मन्जू बड़जात्या, नेमीसागर
24. श्रीमती प्रेमलता अनोपड़ा, जयपुर
25. श्रीमती मीनू अनोपड़ा, जयपुर
26. श्री प्रदीप गंगवाल, नेमीसागर
27. श्रीमती अनीता ठोलिया, नेमीसागर
28. श्रीमती नरकल देवी अजमेरा, नेमीसागर
29. श्रीमती तारा देवी पहाड़िया, नेमीसागर
30. श्रीमती सुनीता गंगवाल, नेमीसागर
31. श्री राजकुमार कोठारी, जयपुर
32. श्री देवप्रकाश खण्डाका, जयपुर
33. श्रीमती तारामणि लोंग्या, जयपुर
34. श्री राजेन्द्र कुमार पाण्ड्या 'खोरावाले'
35. श्रीमती नेहा पाण्ड्या 'खोरावाले'
36. श्रीमती प्रेमलता देवी पाण्ड्या 'खोरावाले'
37. श्रीमती शान्ति देवी गंगवाल 'खोरावाले'
38. श्री राजमल गंगवाल 'खोरावाले'
39. श्री अक्षय कुमार मोदी पाण्ड्या 'खोरावाले'
40. श्रीमती कंचन देवी गंगवाल, कुचामनसिटी
41. श्रीमती मेहताब देवी पहाड़िया, चोराजवाले
42. श्रीमती शान्ति देवी बज, मडुआवाले
43. श्रीमती सरोज शाह, पावटावाले
44. श्रीमती मन्जू शाह, पावटावाले
45. श्रीमती मुन्नी सेठी, मुकन्दपुरावाले
46. श्रीमती सूरज देवी सेठी, मुकन्दपुरावाले
47. श्रीमती रेणु सेठी, मुकन्दपुरावाले
48. श्रीमती शशि सेठी, मुकन्दपुरावाले
49. श्रीमती मन्जू सेठी, मुकन्दपुरावाले
50. श्रीमती प्रमिला सेठी, मुकन्दपुरावाले
51. श्री जयकुमार पाटनी 'कालाडेरावाले', नेमीसागर
52. श्रीमती किरन देवी बगड़ा, सुजानगढ़वाले
53. श्रीमती इन्द्रा देवी बगड़ा, सुजानगढ़वाले
54. श्रीमती गुलाब देवी सेठी, गोनेरवाले
55. श्रीमती मधु पाटनी, अजमेरवाले
56. श्री विमलकुमार बाकलीवाल, सावरदावाले
57. श्रीमती विदाम देवी चाँदवाड़, कोटखावदावाले
58. श्रीमती आशा जैन, मुंडियारामसरवाले
59. श्रीमती रानी जैन, मुंडियारामसरवाले
60. श्रीमती पन्नी देवी सेठी, चोवासवाले
61. श्रीमती तारादेवी पाटनी, जयपुरवाले
62. श्री अमरचन्द बड़जात्या, सिकन्दावाले
63. श्रीमती चन्द्रकान्ता बड़जात्या, रेनवालमाँजीवाले
64. श्री देवेन्द्र कुमार गंगवाल, किशनगढ़वाले
65. श्री छीतरमल भूरामल 'बरसीवाले', जयपुर
66. श्रीमती शान्ति देवी जैन, अजमेरवाले
67. श्रीमती गुणमाला देवी सबलावत, डीमापुर
68. श्री विनीत कुमार अजमेरा, मानसरोवर, जयपुर
69. श्रीमती कमला देवी शाह, चाकसूवाले
70. श्री बाबूलाल शाह, चाकसूवाले
71. श्रीमती रत्ना शाह, जयपुर
72. श्रीमती मन्फूली देवी पाण्ड्या 'भुरटवाले'
73. श्रीमती मनभर देवी बाकलीवाल 'सिरसवाले'
74. श्रीमती सोहन देवी सौगानी 'सांगानेरवाले'
75. श्रीमती सरोज बाकलीवाल, कोलकाता
76. श्रीमती सरला सेठी, मुम्बई
77. श्री मुकेश कुमार पाटनी, मालपुरा
78. श्री रतनलाल बैनाड़ा 'खटवाड़ावाले'
79. श्रीमती कान्ता देवी बैनाड़ा 'खटवाड़ावाले'
80. श्रीमती उषा पाटनी, गुवाहाटी
81. श्रीमती मन्जू देवी अनोपड़ा 'बीलीवाले'
82. श्रीमती आशा गोधा 'नांवावाले'
83. श्रीमती शिल्पा जैन 'किशनगढ़वाले'
84. श्रीमती अल्का कासलीवाल, सी-स्कीम, जयपुर
85. श्रीमती कंचन देवी लुहाड़िया, झोटवाड़ा जयपुर
86. श्री मोहनलाल छाबड़ा 'बूरूवाले'
87. श्री ताराचन्द बाकलीवाल 'निमेड़ावाले'
88. श्रीमती मैना देवी बाकलीवाल 'निमेड़ा वाले'
89. श्रीमती तारा देवी बज 'सलहदीपुरावाले'
90. श्री रमेश कुमार पाटनी 'देवलीवाले'
91. श्रीमती निर्मला ठोलिया 'जोबनेरवाले'
92. श्रीमती सुमन सेठी, सुभाष प्रोजेक्ट, कोलकाता
93. श्रीमती सुमन छाबड़ा 'गुवाहाटीवाले'
94. कु. अनाईना जैन, नई दिल्ली
95. डॉ. सुधीर कुमार जैन, जयपुर
96. श्रीमती सपना बाकलीवाल 'दूर्गवाले'
97. श्रीमती मनीषा बाकलीवाल 'दुर्गवाले'
98. श्रीमती शशि छाबड़ा 'सीकरवाले'
99. श्रीमती विनोद देवी बाकलीवाल 'सामकुवाले'
100. श्रीमती विमला देवी बज, कीर्तिनगर जयपुर
101. श्री राजकुमार सेठी 'सीकरवाले'
102. श्रीमती तारा देवी छाबड़ा, मानसरोवर जयपुर
103. श्री वृजसेन जैन 'ग्वालियरवाले'
104. श्री उम्मेदमल पहाड़िया, मुम्बई
105. श्रीमती गायत्री देवी जैन 'अलीगढ़वाले'
106. श्रीमती निधि बड़जात्या 'लालसोटवाले'
107. श्री चिरंजीलाल काला, शास्त्रीनगर जयपुर
108. श्री नेमीचन्द गंगवाल, नेमीसागर
109. श्रीमती कान्ता देवी सौगानी, कीर्तिनगर जयपुर
110. श्रीमती पताशी देवी अजमेरा 'नांगलवाले'
111. श्रीमती सविता देवी अजमेरा 'नांगलवाले'
112. श्री भागचन्द कासलीवाल 'डुगरावतावाले'
113. श्री कुलदीप चौधरी 'बगरुवाले'
114. श्रीमती सन्तोष देवी पाटनी 'चौरुवाले'
115. श्रीमती सरोज देवी जैन, वैशालीनगर जयपुर
116. श्री पवन कुमार गोदिका, जयपुर
117. श्री सुधीर कुमार सेठी 'मुकुन्दपुरावाले'
118. श्रीमती मुन्ना देवी बाकलीवाल 'निमेड़ावाले'
119. श्रीमती हीरा देवी झांझरी 'सूरतवाले'
120. श्रीमती सुधा जैन 'टीकमगढ़वाले'
121. पंडित श्री विमल कुमार जैन 'धनेठवाले'
122. श्री बाबूलाल जैन 'सिवाड़वाले'
123. श्री राजेन्द्र कुमार बड़जात्या 'चौमूंवाले'
124. श्री राजेन्द्र कुमार बड़जात्या 'गौजमाबादवाले'
125. श्रीमती मुन्नी बैनाड़्या, मेंहदी का चौक जयपुर
126. श्री महेन्द्र कुमार पाटनी 'डीमापुरवाले'
127. श्री गणेश कुमार राणा, सी-स्कीम, जयपुर
128. श्री प्रकाशचन्द बाकलीवाल 'निमेड़ावाले'
129. श्री पदमचन्द सेठी 'अजमेरवाले'
130. श्री प्रभुदयाल ठोलिया 'किशनगढ़ रैनवालवाले'
131. श्री देवेन्द्र कुमार बाकलीवाल 'निमोड़ियावाले'
132. श्री ताराचन्द पाटनी 'कालाडेरावाले'
133. श्री अशोक कुमार चाँदवाड़, वसुन्धरा कॉलोनी
134. श्री महेश कुमार सेठी 'मुकुन्दपुरावाले'
135. श्री टीकमचन्द ठोलिया, शान्तिनगर, जयपुर
136. श्री राजेन्द्र लुहाड़िया 'लुहाड़िया चेरिटेबल ट्रस्ट'
137. श्रीमती सुजाता सेठी, नेमीसागर
138. श्रीमती नमिता ठोलिया, नेमीसागर
139. श्रीमती नीलम गंगवाल, मुम्बई
140. श्री अनिल कुमार छाबड़ा 'इमफालवाले'
141. श्रीमती निकिता छाबड़ा 'बेगसवाले'
142. श्रीमती मन्जू देवी सेठी, नेमीसागर
143. श्रीमती रितिका गंगवाल, नेमीसागर
144. श्री रतनलाल ठोलिया 'डिंगोनियावाले'
145. श्री महावीर कुमार कासलीवाल 'साईवाड़वाले'
146. श्रीमती जानकी देवी गंगवाल 'तुंगावाले'
147. श्री भागचन्द छाबड़ा 'टाकन्ड़ावाले'
148. श्री टीकमचन्द पाटोदी 'नांवावाले'
149. श्रीमती उमराव देवी छाबड़ा, लालकोठी जयपुर
150. श्री अजय कुमार पाटोदी, जयपुर
151. श्री सुरेश कुमार गंगवाल, सुभाष नगर जयपुर
152. श्री मीनू छाबड़ा 'बेगसवाले', जयपुर
153. श्रीमती मन्जू बड़जात्या 'रेनवालमांजीवाले'
154. श्री अमरचन्द काला 'दातावाले', जयपुर
155. श्री अनन्त कुमार बैनाड़ा, अग्रवाल फार्म, जयपुर
156. श्री अशोक कुमार ठोलिया (सांभरवाले जयपुर)
157. श्री सुरेश कुमार सेठी (चिथवाड़ीवाले जयपुर)
158. श्रीमती सरोज देवी पाटोदी (गिरिडीहवाले झारखण्डवाले)
159. श्री पवन कुमार काला (बाँसावाले जयपुर)
160 श्री सुनील कुमार सौगानी (नाँवावाले जयपुर)
161. श्री विहान छाबड़ा (बेगसवाले जयपुर)
162. श्री रजत-मान्सी छाबड़ा (बेगसवाले जयपुर)
163. श्री प्रेमचन्द जी कोठ्यारी (मधुबन कॉलोनी)
164. स्व. श्री सुनील कुमार जी की पुण्य स्मृति में श्रीमती आशा बड़जात्या, जयपुर
165. श्री मुकेश कुमार जी ठोलिया, जोबनेर वाले, झोटवाड़ा
166. श्री टीकमचन्द जी अजमेरा, सांगानेर
167. श्री विशाल कुमार जी जैन, गोम डिफेन्स कॉलोनी
168. श्री राकेश कुमार जी मोदी, गोविन्दनगर कॉलोनी
169. श्री राजेश कुमार जी काला, जोबनेर मन्दिर के पास
170. श्री सेठ आलोक आशा जैन, बी-57, अशोक कॉलोनी, जयपुर
171. श्री भागचन्द जी बाकलीवाल सांखुनवाले
172. श्रीमती मनोरमा देवी जी छाबड़ा, मधुबन कॉलोनी
173. श्री अशोक कुमार जी झांझरी, नेमीसागर कॉलोनी
174. श्री वरुण कुमार जी चाँदवाड़, सिद्धार्थ नगर
175. श्री महावीर कुमार जी रांवका, सिद्धार्थ नगर
176. श्री दिलीप कुमार जी कासलीवाल, मधुबन
177. श्री प्रशान्त जी अजमेरा
178. श्री गजेन्द्र कुमार जी बड़जात्या, कामांवाले, वैशाली नगर
179. श्री हेमन्त कुमार जी गोधीका
180. श्री प्रज्वल कुमार जी पाटोदी, इन्दौर
181. श्री ज्ञानचन्द जी जैन (सावर वाले), वैशाली नगर
182. श्री निर्मल कुमार जी तेरापंथी, सिद्धार्थ नगर
183. श्री सतीश जी बाकलीवाल, सिद्धार्थ नगर
184. श्री हरकचन्द जी छाबड़ा, मधुबन - टौंक फाटक
185. श्री नरेन्द्र कुमार जी ठोलिया, मधुबन - टौंक फाटक
186. श्री अभनेश जी जैन कासलीवाल, मधुबन - टौंक फाटक
187. श्रीमती मंजू जी जैन, शान्ति नगर
188. श्री नरेश कुमार जी कासलीवाल, त्रिवेणी नगर
189. श्री विनोद जी जैन कोटखावदा
190. श्रीमती राखी जी जैन, मोहनबाड़ी
191. श्रीमती रचना मनीष एवं यश बैद

परम संरक्षकगण-

श्रेष्ठी श्रीमान् अशोक कुमार जी अंकित कुमार जी चाँदवाड़, कीर्तिनगर, जयपुर
श्री प्रकाश चन्द जी शशि जी सेठी (मुकुन्दपुरा वाले)
श्री चेतनकुमारजी रेखाजी जैन छाबड़ा, श्री डॉ. आनन्दकुमार जी-डॉ. मिनी जी,
श्री मनन जैन छाबड़ा-बगरु-बेगस वाले, (लालकोठी, जयपुर)
श्री नरेश कुमार जी- श्रीमती कान्ता जी पहाड़िया, बगरुवाले (कोलकाता)
श्री विनोद कुमार जी- श्रीमती नन्दा जी पहाड़िया, बगरुवाले (कोलकाता)
श्री जितेन्द्र कुमार जी- श्रीमती रंजना जी पहाड़िया (नागपुर)
श्री सुरेश कुमार जी- श्रीमती सरिता जी पाटनी (ईसीवसवाले), कोलकाता
श्रीमती कमला देवी जी गंगवाल (धर्मपत्नी स्व. श्री पूनमचन्द जी गंगवाल-झरियावाले)
श्री सुभाषचन्द जी-श्रीमती सुमन जी सेठी
(सुभाष प्रोजेक्ट एण्ड मार्केटिंग लि.), कोलकाता
श्री संतोष कुमार जी-प्रेमलता जी अनोपड़ा (निवासी-बीली, प्रवासी-जयपुर)
श्री निर्मल कुमार जी- श्रीमती नीलम जी गंगवाल (निवासी-कुचामनसिटी, प्रवासी-मुम्बई)
श्री माणक चन्द जी- श्रीमती कमला देवी जी छाबड़ा (बेगसवाले), जयपुर
श्रीमती सूरजदेवी जी बेगस्या (धर्मपत्नी स्व. श्री बाबूलाल जी बेगस्या), शास्त्री नगर
श्री गुलाबचन्द जी राजेन्द्र कुमार जी पाण्ड्या (खोरावाले)
श्री कल्याणमल जी पूनमचन्द जी ठोलिया (जोबनेर वाले), नेमीसागर कॉलोनी, जयपुर
श्रीमती किरण देवी जी बगड़ा (धर्मपत्नी स्व. श्री शान्तिलालजी बगड़ा), सुजानगढ़वाले, ज्योति नगर
श्रीमती सुमन जी छाबड़ा (धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र कुमार जी छाबड़ा), गुवाहाटी
श्रीमती अनोपदेवी जी छाबड़ा धर्मपत्नी स्व. श्री भौरीलाल जी छाबड़ा, बेगसवाले, जयपुर
श्री फूलचन्द जी कपूरीलाल जी राकेश जी पाटनी (निवासी-लाडनूं/प्रवासी-सूरत)
श्री सुरेश कुमार जी गंगवाल-श्रीमती कान्तादेवी जी गंगवाल, सुभाष नगर, जयपुर
श्रीमती उमा जी धर्मपत्नी श्री महावीर कुमार जी जिनेश जी रांवका, सिद्धार्थ नगर
श्री राकेश कुमार जी शिल्पा जी मोदी, नेमीसागर कॉलोनी
श्री जय कुमार जी जैन, श्रीमती मंजू जी बड़जात्या, नेमीसागर कॉलोनी

भोजन व्यवस्था प्रभारीगण.... सर्वश्री रमेश जी छाबड़ा, अशोक जी छाबड़ा, सुनील जी बेगस्या, प्रमोद जी छाबड़ा कमल जी छाबड़ा, पूरणप्रकाश जी बेगस्या, हर्षित जी बड़जात्या, अनिल जी जैन, जोबनेर वाले, हितेश जी पाटनी, चौरुवाले

आयोजक - प्रबन्धकारिणी समिति श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, ग्राम बेगस, जिला-जयपुर (राज.)

विनीत - सकल दिगम्बर जैन समाज, ग्राम बेगस, जिला-जयपुर (राज.)

मुख्य समन्वयक

पूनम चन्द ठोलिया
अध्यक्ष
98290-81559

जयकुमार जैन बड़जात्या
94143-23692

सुरेश छाबड़ा
मंत्री
93149-32520

एवं समस्त पदाधिकारी कार्यकारिणी सदस्यगण

पत्रिका पुण्यार्जक परिवार.................

जैन मूर्तियों के लिए विश्वसनीय स्थान
Murli Moorti Kala Kendra
Shop: Khajane Walon Ka Rasta, 2nd Crossing, Chandpole Bazar, Jaipur-302001
Office/Resi: 1376, Gayatri Bhawan, 3rd Cross, Khejro Ka Rasta, Chandpole Bazar, Jaipur
Contact: 98291-48913 | 98295-38058 | 98285-47714 98291-48913 | 98285-47714 Email: murlimoorti@gmail.com

पद्मावती पब्लिक स्कूल में धूमधाम से मनाया गया 'श्रमिक दिवस'

नन्हे विद्यार्थियों ने चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों का किया सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद द्वारा संचालित पद्मावती पब्लिक स्कूल, मानसरोवर में आज 'श्रमिक दिवस' (मजदूर दिवस) अत्यंत उल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में श्रम के प्रति सम्मान और सेवादारों के प्रति कृतज्ञता का भाव जागृत करना था।

तिलक लगाकर और ग्रीटिंग कार्ड्स भेंट कर किया अभिनंदन

विद्यालय की आचार्या श्रीमती हेमलता जैन ने बताया कि इस विशेष अवसर पर नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने विद्यालय के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों, सफाई कर्मियों और सुरक्षा गार्ड्स का तिलक लगाकर अभिनंदन किया। बच्चों ने अपने हाथों से सुंदर ग्रीटिंग कार्ड्स बनाकर उन्हें भेंट किए, जिसे पाकर कर्मचारियों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

शिक्षकों ने पहनाई माला और बांटी मिठाई

केवल विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि विद्यालय के अध्यापकों ने भी इस गरिमामय आयोजन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। शिक्षकों द्वारा सभी श्रमिक भाई-बहनों को माला पहनाकर और मिठाई खिलाकर सम्मानित किया गया। विद्यालय परिवार की ओर से उनके कठिन परिश्रम की सराहना की गई।

श्रम की महत्ता का संदेश

इस अवसर पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए यह संदेश दिया गया कि हमारे दैनिक जीवन में इन सभी श्रमिकों का बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण योगदान होता है। किसी भी संस्था की नींव को मजबूत करने और उसकी सफलता सुनिश्चित करने में इनका श्रम अत्यंत मूल्यवान एवं सराहनीय है। कार्यक्रम का समापन 'श्रम की गरिमा' को अक्षुण्ण बनाए रखने के संकल्प के साथ हुआ।

राममंदिर में श्रीमद् भागवत कथा का भव्य समापन; हवन-यज्ञ और नाम जप की महिमा के साथ दी पूर्णाहुति

रमेश भार्गव. शाबाश इंडिया

ऐलनाबाद। शहर के वार्ड नंबर 09 स्थित राममंदिर में महिला मंडल द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा का शुक्रवार को विधि-विधान के साथ समापन हुआ। श्री श्री 108 महंत श्री भरतमुनि उदासीन महाराज के सानिध्य में आयोजित इस कथा का समापन भव्य हवन-यज्ञ और महाप्रसादी के साथ संपन्न हुआ।

नाम जप ही कलयुग का आधार: महंत भरत मुनि

कथा के अंतिम दिन श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए पूज्य भरत मुनि जी महाराज ने 'नाम जप की महिमा' का अत्यंत भावपूर्ण वर्णन किया। उन्होंने कहा कि कलयुग में ईश्वर की प्राप्ति और मानसिक शांति के लिए भगवान के नाम का स्मरण ही सबसे सरल और अमोघ साधन है। महाराज जी ने विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से समझाया कि सच्चे भाव से किया गया नाम संकीर्तन न केवल मनुष्य के पापों का क्षय करता है, बल्कि उसके जीवन में सकारात्मकता और आध्यात्मिक चेतना का संचार भी करता है।

हवन-यज्ञ में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

पूर्णाहुति के अवसर पर आयोजित हवन-यज्ञ में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने आहुतियां देकर धर्म लाभ उठाया। मंत्रोच्चार के बीच संपन्न हुए इस अनुष्ठान से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। श्रद्धालुओं ने गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त कर सुख-समृद्धि की कामना की।

आगामी कथा कार्यक्रम

महंत भरत मुनि जी महाराज के शिष्य रामनिवास रसिया ने जानकारी देते हुए बताया कि गुरुदेव की अगली श्रीमद् भागवत कथा 2 मई से 8 मई तक ऐलनाबाद खंड के गांव उमेदपुरा में आयोजित की जाएगी। इसके उपरांत महाराज जी एक माह के प्रवास पर छत्तीसगढ़ जाएंगे, जहाँ विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों में शिरकत करेंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि छत्तीसगढ़ प्रवास से लौटने के पश्चात राममंदिर में भागवत कथा का क्रम पुनः निरंतर जारी रहेगा। समापन अवसर पर आयोजन समिति ने सभी भक्तों और सेवादारों का आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के धार्मिक आयोजनों में सक्रिय सहभागिता निभाने की अपील की।

मोदीनगर में दौड़ी खुशियों की लहर, दिगम्बर महामुनिराज का भव्य आगमन

02 मई को आचार्य गुरुवर का जन्म महोत्सव मनाया जाएगा

मोदीनगर. शाबाश इंडिया। मोदीनगर में उस समय हर्ष और उल्लास का वातावरण छा गया, जब विशाल चतुर्विध संघ के अधिनायक, ''जीवन है पानी की बूंद'' महाकाव्य के रचनाकार, संघ शिरोमणि, भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज ससंघ (33 पीछी) का आगमन हुआ। उनके आगमन से सम्पूर्ण जैन समाज में अपूर्व उत्साह देखने को मिला। आबाल-वृद्ध सभी में अद्भुत उमंग और प्रत्येक चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही है। इस खुशी का माहौल तब और अधिक बढ़ गया, जब यह ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री विमर्शसागर जी के शिक्षा-दीक्षा दाता, परमपूज्य समाधि सम्राट, चक्रवर्ती सूरिगच्छाचार्य, शुद्धोपयोगी संत गुरुवर श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज का 64वां जन्म महोत्सव भी इसी अवसर पर मोदीनगर में ही मनाया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि 02 मई का यह पावन दिवस गुरुवर श्री विरागसागर जी का जन्म दिवस है, जिनका जन्म वर्ष 1963 में बुन्देलखण्ड के पथरिया ग्राम में हुआ था। आगे चलकर वे सैकड़ों शिष्यों के मार्गदर्शक और विश्व विख्यात संत के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इस अवसर पर 02 मई शनिवार को श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य संघ की पावन सन्निधि में प्रातःकाल जिनाभिषेक के पश्चात जन्म महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन, मंगलाचरण, पाद-प्रक्षालन, शास्त्र भेंट, गुरु पूजन एवं विनयांजलि के माध्यम से गुरुवर की महिमा का गुणगान किया जाएगा। संध्याकाल में 64 दीप थालों से गुरुवर की भव्य महाआरती की जाएगी, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है।